रचित सुसमाचार

दाम एक पैसा।

लूका रचित सुसमाचार।

—:※:—

१ इस लिये कि बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। २ जैसा कि उन्हों ने जो पहिले ही से इन बातों के देखनेवाले और बचन के सेवक थे हमें सौंपा। ३ सो हे श्रीमान् थियुफिलुस मुझे अच्छा लगा कि सब बातों का हाल चाल आरम्भ से ठीक ठीक जांच कर के उन्हें तेरे लिये सिलसिलेवार लिखूं। ४ कि तू जान ले कि वे बातें जिन की तू ने शिक्षा पाई है कैसी पक्की हैं॥

५ यहूदिया के राजा हेरोदेस के समय अबिय्याह के दल में जकरयाह नाम एक याजक था और उस की पत्नी हारून के बंश की थी जिस का नाम इलीशिबा था। ६ और वे दोनों परमेश्वर के साम्हने धर्म्मी थे और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलने वाले थे। ७ उन के कोई सन्तान न थी क्योंकि इलीशिबा बांझ थी और वे दोनों बूढ़े थे॥

८ जब वह अपने दल की पारी पर परमेश्वर के सामने याजक का काम करता था। ९ तो याजकों की रीति के अनुसार उस के नाम पर चिट्ठी निकली कि प्रभु के मन्दिर

में जाकर धूप जलाए। १० और धूप जलाने के समय लोगों की सारी मण्डली बाहर प्रार्थना कर रही थी। ११ कि प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दंहिनी ओर खड़ा हुआ उस को दिखाई दिया। १२ और जकरयाह देखकर घबराया और उस पर बड़ा भय छा गया। १३ पर स्वर्गदूत ने उस से कहा हे जकरयाह भय न खा क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई और तेरी पत्नी इलीशिबा तेरे लिये पुत्र जनेगी और तू उस का नाम यूहन्ना रखना। १४ और तुझे आनन्द और हर्ष होगा और बहुत लोग उस के जन्म के कारण आनन्दित होंगे। १५ क्योंकि वह प्रभु के साम्हने महान होगा और दाखरस और मद कभी न पीयेगा और अपनी माता के पेट ही से पवित्र आत्मा से भरपूर हो जाएगा। १६ और इस्राईलियों में से बहुतेरों को उन के प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा। १७ वह एलिय्याह के आत्मा और सामर्थ में हो कर उस के आगे आगे चलेगा कि पितरों का मन लड़केवालों की ओर फेर दे और आज्ञा न माननेवालों को धर्म्मियों की समझ पर चलाए और प्रभु के लिये एक योग्य प्रजा तैयार करे। १८ जकरयाह ने स्वर्गदूत से पूछा यह मैं कैसे जानूं क्योंकि मैं तो बूढ़ा हूँ और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है। १९ स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया कि मैं जिबरईल हूं जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता हूं और मैं तुझ से बातें करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने भेजा गया हूँ। २० और

देख जिस दिन तक ये बातें पूरी न हो लें उस दिन तक तू चुपचाप रहेगा और बोल न सकेगा इस लिये कि तू ने मेरी बातों की जो अपने समय पर पूरी होंगी प्रतीति न की। २१ और लोग ज़करयाह की बाट देखते और अचम्भा करते थे कि उसे मन्दिर में ऐसी देर क्यों लगी। २२ जब वह बाहर आया तो उन से बोल न सका सो वे जान गए कि उस ने मन्दिर में कोई दर्शन पाया है और वह उन से सैन करता रहा और गूंगा रह गया। २३ जब उस की सेवा के दिन पूरे हुए तो वह अपने घर गये॥

२४ इन दिनों के पीछे उस की पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई और पांच महीने तक अपने आप को यह कहके छिपाए रक्खा, २५ कि मनुष्यों में मेरा अपमान दूर करने के लिये प्रभु ने इन दिनों में कृपादृष्टि कर मेरे लिये ऐसा किया है॥

२६ छठे महीने परमेश्वर की ओर से जिबरईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया, २७ जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी। उस कुंवारी का नाम मरयम था। २८ और उस ने उस के पास भीतर आकर कहा आनन्द तुझ को जिस पर अनुग्रह हुआ है प्रभु तेरे साथ है। २९ वह उस बचन से बहुत घबरा गई और सोचने लगी कि यह कैसा नमस्कार है। ३० स्वर्गदूत ने उस से कहा हे मरयम भय न

कर क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। ३१ और देख तू गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी तू उस का नाम यीशु रखना। ३२ वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा और प्रभु परमेश्वर उस के पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा। ३३ और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा और उस के राज्य का अन्त न होगा। ३४ मरयम ने स्वर्गदूत से कहा यह क्योंकर होगा मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। ३५ स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इस लिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। ३६ और देख तेरी कुटुम्बिनी इलीशिबा के भी बुढ़ापे में पुत्र होनेवाला है यह उस का जो बांझ कहलाती थी छठा महीना है। ३७ क्योंकि जो बचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभाव रहित नहीं होता। ३८ मरयम ने कहा देख मैं प्रभु की दासी हूं मुझे तेरे बचन के अनुसार हो। तब स्वर्गदूत उस के पास से चला गया॥

३९ उन दिनों में मरयम उठकर शीघ्र ही पहाड़ी देश में यहूदा के एक नगर को गई। ४० और जकरयाह के घर में जाकर इलीशिबा को नमस्कार किया। ४१ ज्योंही इलीशिबा ने मरयम का नमस्कार सुना त्योंही बच्चा उस के पेट में उछला और इलीशिबा पवित्र आत्मा से भरपूर हो गई। ४२ और उस ने बड़े शब्द से पुकार के कहा तू स्त्रियों में धन्य

और तेरे पेट का फल धन्य है। ४३ और यह अनुग्रह मुझे कहां से हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई। ४४ और देख ज्योंही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा त्योंही बच्चा मेरे पेट में आनन्द से उछल पड़ा। ४५ और धन्य है वह जिस ने बिश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से उस से कही गईं वे पूरी होंगी। ४६ तब मरयम ने कहा मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है। ४७ और मेरा आत्मा मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुआ। ४८ क्योंकि उस ने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है इस लिये देखो अब से सब समयों के लोग मुझे धन्य कहेंगे। ४९ क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिये बड़े बड़े काम किए हैं और उस का नाम पवित्र है। ५० और उस की दया उन पर जो उस से डरते हैं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है। ५१ उस ने अपना बाहुबल दिखाया और जो अपने आप को बड़ा समझते थे उन्हें तित्तर बित्तर किया। ५२ उस ने बलवानों को सिंहासनों से गिरा दिया और दीनों को ऊंचा किया। ५३ उस ने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया और धन-वानों को छूछे हाथ निकाल दिया। ५४ उस ने अपने सेवक इस्राईल को सम्भाल लिया। ५५ कि अपनी उस दया को स्मरण करे जो इब्राहीम और उस के बंश पर सदा रहेगी जैसा उस ने हमारे बाप दादों से कहा था। ५६ मरयम लग-भग तीन महीने उस के साथ रहकर अपने घर लौट गई॥

५७ तब इलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ और वह पुत्र जनी। ५८ उस के पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने यह सुन कर कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया की उस के साथ आनन्द किया। ५९ और आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए और उस का नाम उस के पिता के नाम पर जकरयाह रखने लगे। ६० और उस की माता ने उत्तर दिया सो नहीं बरन उस का नाम यूहन्ना रक्खा जाए। ६१ और उन्हों ने उस से कहा तेरे कुटुम्ब में किसी का यह नाम नहीं ६२ तब उन्हों ने उस के पिता से सैन किया कि तू उस का नाम क्या रखना चाहता है। ६३ और उस ने पाटी मंगाकर लिख दिया कि उस का नाम यूहन्ना है और सब ने अचम्भा किया। ६४ तब उस का मुंह और जीभ तुरन्त खुल गई और वह बोलने और परमेश्वर का धन्यवाद करने लगा। ६५ और उन के आस पास के सब रहनेवालों पर भय छा गया और इन सब बातों की चरचा यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में फैल गई। ६६ और सब सुननेवालों ने अपने अपने मन में बिचार कर कहा यह बालक कैसा होगा क्योंकि प्रभु का हाथ उस के साथ था॥

६७ और उस का पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से भर-पूर हो गया और नबूवत करने लगा, ६८ कि प्रभु इस्राईल का परमेश्वर धन्य हो कि उस ने अपने लोगों पर दृष्टि कर उन का छुटकारा किया है। ६९ और अपने सेवक दाऊद के

घराने में हमारे लिये एक उद्धार का सींग निकाला। ७० जैसे उस ने अपने पवित्र नबियों के द्वारा जो जगत के आदि से होते आए हैं कहा, ७१ कि हमारे शत्रुओं से और हमारे सब बैरियों के हाथ से हमारा उद्धार किया है। ७२ कि हमारे बाप दादों पर दया करके अपनी पवित्र बाचा स्मरण करे। ७३ अर्थात् वह किरिया जो उसने हमारे पिता इब्राहीम से खाई थी। ७४ कि वह हमें यह देगा कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से छूटकर, ७५ उस के सामने पवित्रता और धार्म्मिकता से जीवन भर निडर रहकर उस की सेवा करते रहें। ७६ और तू हे बालक परम प्रधान का नबी कहलाएगा क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार करने के लिये उस के आगे आगे चलेगा, ७७ कि उस के लोगों को उद्धार का ज्ञान दे जो उन के पापों की क्षमा से प्राप्त होता है। ७८ यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करुणा से होगा जिस के कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा, ७९ कि अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को ज्योति दे और हमारे पावों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए॥

८० और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया और इस्राईल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा॥

२. उन दिनों में औगूस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली कि सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं। २ यह पहिली नाम लिखाई उस समय हुई जब क्विरिनियुस सूरिया का हाकिम था। ३ और सब लोग नाम लिखवाने के लिये अपने अपने नगर को गए। ४ सो यूसुफ भी इस लिये कि वह दाऊद के घराने और बंश का था गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया, ५ कि अपनी मंगेतर मरयम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए। ६ उन के वहां रहते हुए उस के जनने के दिन पूरे हुये। ७ और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रक्खा क्योंकि उन के लिये सराय में जगह न थी॥

८ और उस देश में कितने रखवाले थे जो रात को मैदान में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे। ९ और प्रभु का एक दूत उन के पास आ खड़ा हुआ और प्रभु का तेज उन के चारों ओर चमका और वे बहुत डर गये। १० तब स्वर्गदूत ने उन से कहा मत डरो क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धार कर्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है। ११ और इस का तुम्हारे लिये यह पता है कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा और चरनी में पड़ा

पाओगे । १३ तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते और यह कहते दिखाई दिया, १४ कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथिवी पर उन मनुष्यों में जिन से वह प्रसन्न है शान्ति हो ॥

१५ जब स्वर्गदूत उन के पास से स्वर्ग को चले गये तो रखवालों ने आपस में कहा आओ हम बैतलहम जाकर यह बात जो हुई और जिसे प्रभु ने हमें बताया है देखें। १६ और उन्हों ने तुरन्त जाकर मरयम और यूसुफ को और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा। १७ इन्हें देखकर उन्हों ने वह बात जो इस बालक के विषय उन से कही गई थी प्रगट की। १८ और सब सुननेवालों ने उन बातों से जो रखवालों ने उन से कहीं अचम्भा किया। १९ पर मरयम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही। २० और रखवाले जैसा उन से कहा था वैसा ही सब सुनकर और देखकर परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए ॥

२१ जब आठ दिन पूरे हुए और उस के खतने का समय आया तो उस का नाम यीशु रक्खा गया जो स्वर्गदूत ने उस के पेट में आने से पहिले कहा था ॥

२२ और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उन के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तो वे उसे यरूशलेम में ले गए कि प्रभु के सामने लाएं। २३ (जैसा कि प्रभु की व्यवस्था

में लिखा है कि हर एक पहिलौठा प्रभु के लिये पवित्र ठहरेगा), २४ और प्रभु की व्यवस्था के बचन के अनुसार पंडुकों का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे लाकर बलिदान करें । २५ और देखो यरूशलेम में शमौन नाम एक मनुष्य था और वह मनुष्य धर्म्मी और भक्त था और इस्राईल की शांति की बाट जोहता था और पवित्र आत्मा उस पर था । २६ और पवित्र आत्मा से उस को चितावनी हुई थी कि जब तक तू प्रभु के मसीह को देख न ले तब तक मृत्यु को न देखेगा । २७ और वह आत्मा के सिखाने से मन्दिर में आया और जब माता पिता उस बालक यीशु को भीतर लाए कि उस के लिये व्यवस्था की रीति के अनुसार करें । २८ तो उस ने उसे अपनी गोद में लिया और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा, २९ हे स्वामी अब तू अपने दास को अपने बचन के अनुसार शांति से बिदा करता है । ३० क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है । ३१ जिसे तू ने सब देशों के लोगों के सामने तैयार किया है । ३२ कि वह अन्य जातियों को प्रकाश देने के लिये ज्योति और तेरे निज लोग इस्राईल की महिमा हो । ३३ और उस का पिता और उस की माता इन बातों से जो उस के विषय में कही जाती थीं अचम्भा करते थे । ३४ तब शमौन ने उन को आशीष देकर उस की माता मरयम से कहा देख यह तो इस्राईल में बहुतों के गिरने

और उठने के लिये और ऐसा एक चिन्ह होने के लिये ठहराया गया है जिस के निरोध में बातें की जाएंगी—३५ बरन तेरा प्राण भी तलवार से वार पार छिद् जाएगा—इस से बहुत हृदयों के विचार प्रगट होंगे। ३६ और अशेर के गोत्र में से हन्नाह नाम फनूएल की बेटी एक नबिया थी। वह बहुत बूढ़ी थी और ब्याह होने के बाद सात बरस अपने पति के साथ रही थी। ३७ वह चौरासी बरस से बिधवा थी और मन्दिर को न छोड़ती थी पर उपवास और प्रार्थना कर करके रात दिन उपासना किया करती थी। ३८ और वह उसी घड़ी वहां आकर प्रभु का धन्यवाद करने लगी और उन सब से जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे उस के विषय में बातें करने लगी। ३९ और जब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ कर चुके तो गलील में अपने नगर नासरत को चले गए॥

४० और बालक बढ़ता और बलवन्त होता और बुद्धि से भरपूर होता गया और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था॥

४१ उस के माता पिता बरस बरस फसह के पर्ब्ब में यरूशलेम को जाया करते थे। ४२ जब वह बारह बरस का हुआ तो वे पर्ब्ब की रीति के अनुसार यरूशलेम को गए। ४३ और जब वे उन दिनों को पूरा करके लौटने लगे तो वह लड़का यीशु यरूशलेम में रह गया और यह

उस के माता पिता न जानते थे। ४४ वे यह समझकर कि वह और बटोहियों के साथ होगा एक दिन का पड़ाव निकल गए और उसे अपने कुटुम्बियों और जान पहचानों में ढूंढ़ने लगे। ४५ पर जब न मिला तो ढूंढ़ते ढूंढ़ते यरूशलेम को फिर लौट गए। ४६ और तीन दिन के पीछे उन्हों ने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच बैठे उन की सुनते और उन से प्रश्न करते हुए पाया। ४७ और जितने उसकी सुन रहे थे वे सब उस की समझ और उस के उत्तरों से चकित थे। ४८ तब वे उसे देखकर चकित हुए और उस की माता ने उस से कहा हे पुत्र तू ने हम से क्यों ऐसा व्यवहार किया देख तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे। ४९ उस ने उन से कहा तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है। ५० पर जो बात उस ने उन से कही उन्हों ने न समझी। ५१ तब वह उन के साथ गया और नासरत में आया और उन के वश में रहा और उस की माता ने ये सब बातें अपने मन में रक्खीं॥

५२ और यीशु बुद्धि और डील डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया॥

३. तिबिरियुस कैसर के राज्य के पंद्रहवें बरस में जब पुन्तियुस पीलातुस यहूदिया का हाकिम था और गलील में हेरोदेस नाम चौथाई का इतूरैया और

अखोनीतिस में उस का भाई फिलिप्पुस और अबिलेने में लिसानियास चौथाई के राजा थे। २ और जब हन्ना और काइफा महायाजक थे उस समय परमेश्वर का वचन जंगल में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा। ३ और वह यरदन के आस पास के सारे देश में आकर पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिसमा का प्रचार करने लगा। ४ जैसे यशायाह नबी के कहे हुये बचनों की पुस्तक में लिखा है कि जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो उस की सड़कें सीधी करो। ५ हर एक घाटी भर दी जाएगी और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा और जो टेढ़ा है सीधा और जो ऊंचा नीचा है चौरस मार्ग बनेगा। ६ और हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेगा।

७ जो भीड़ की भीड़ उस से बपतिसमा लेने को निकल आती थी उन से वह कहता था हे सांप के बच्चो तुम्हें किस ने जता दिया कि आने वाले क्रोध से भागो। ८ मन फिराव के योग्य फल लाओ और अपने अपने मन में यह न सोचो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। ९ और अब ही कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर धरा है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता वह काटा और आग में झोंका जाता है। १० और लोगों ने उस से

पूछा तो हम क्या करें। ११ उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिस के पास दो कुरते हों वह उस के साथ जिस के पास नहीं बांट दे और जिस के पास भोजन हो वह भी ऐसा ही करे। १२ और महसूल लेने वाले भी बपतिसमा लेने आये और उस से पूछा कि हे गुरु हम क्या करें। १३ उस ने उन से कहा जो तुम्हारे लिये ठहराया गया है उस से अधिक न लेना। १४ और सिपाहियों ने भी उस से यह पूछा हम क्या करें। उस ने उन से कहा किसी पर उपद्रव न करना और न झूठा दोष लगाना और अपनी मजूरी पर सन्तोष करना॥

१५ जब लोग आस लगाए हुये थे और सब अपने अपने मन में यूहन्ना के विषय विचार कर रहे थे कि क्या यही मसीह न होगा। १६ तो यूहन्ना ने उन सब से उत्तर दे कहा कि मैं तो तुम्हें पानी से बपतिसमा देता हूं पर वह आता है जो मुझ से शक्तिमान है मैं इस योग्य नहीं कि उस के जूतों का बंध खोलूं वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिसमा देगा। १७ उस का सूप उस के हाथ में है और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा और गेहूं को अपने खत्ते में इकट्ठा करेगा पर भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा॥

१८ फिर वह बहुत और बातों का भी उपदेश कर के लोगों को सुसमाचार सुनाता रहा। १९ पर उस ने चौथाई

देश के राजा हेरोदेस को उस के भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के विषय और सब कुकर्म्मों के विषय में जो उस ने किये थे उलाहना दिया था । २० इस लिये हेरोदेस ने उन सब से बढ कर यह कुकर्म भी किया कि यूहन्ना को जेलखाने में डाल दिया ॥

२१ जब सब लोगों ने बपतिसमा लिया और यीशु भी बपतिसमा लेकर प्रार्थना कर रहा था तो आकाश खुल गया । २२ और पवित्र आत्मा देही रूप में कबूतर की नाईं उस पर उतरा और यह आकाशबाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है मैं तुझ से प्रसन्न हूं ॥

२३ जब यीशु आप उपदेश करने लगा तो बरस तीस एक का था और (जैसा समझा जाता था) यूसुफ का पुत्र था । २४ और वह एली का वह मत्तात का वह लेवी का वह मलकी का वह यन्ना का वह यूसुफ का । २५ वह मत्तित्याह का वह आमोस का वह नहूम का वह असल्याह का वह नोगह का । २६ वह मात का वह मत्तित्याह का वह शिमी का वह योसेख का वह योदाह का, २७ वह यूहन्ना का वह रेसा का वह जरुब्बाबिल का वह शालतियेल का वह नेरी का, २८ वह मलकी का वह अद्दी का वह कोसाम का वह इलमोदाम का वह एर का। २९ वह येशू का वह इलाजार का वह योरीमका वह मत्तात का वह लेवी का, ३० वह शमौन का वह यहूदाह का वह योसुफ़ का वह योनान

का वह इलयाकीम का ३१ वह मलेआह का वह मिन्नाह का वह मत्तता का वह नातान का वह दाऊद का। ३२ वह यिशै का वह ओबेद का वह बोअज का वह सलमोन का वह नह-शोन का। ३३ वह अम्मीनादाब का वह अरनी का वह हिस्रोन का वह फिरिस का वह यहूदाह का। ३४ वह याकूब का वह इसहाक का वह इब्राहीम का वह तिरह का वह नाहोर का। ३५ वह सरूग का वह रऊ का वह फिलिग का वह एबिर का वह शिलह का, ३६ वह केनान का वह अरफ-क्षद का वह शेम का वह नूह का वह लिमिक का। ३७ वह मथूशिलह का वह हनोक का वह यिरिद का वह महललेल का वह केनान का, वह इनोश का वह शेत का वह आदम का और वह परमेश्वर का॥

४. यीशु पवित्रात्मा से भरा हुआ यरदन से लौटा और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा, और शैतान उस की परीक्षा करता रहा। २ उन दिनों में उस ने कुछ न खाया और जब वे दिन पूरे हो गये तो उसे भूख लगी। ३ और शैतान ने उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर से कह दे कि रोटी बन जाए। ४ यीशुने उसे उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटी ही से जीता न रहेगा। ५ तब शैतान उसे ले गया और उस को पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए। ६ और शैतान ने उस से कहा मैं यह सब अधिकार

और इन का बिभव तुझे दूंगा क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है और जिसे चाहता हूं उसी को दे देता हूं । ७ इस लिये यदि तू मुझे प्रणाम करे तो यह सब तेरा हो जाएगा । ८ यीशु ने उसे उत्तर दिया लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर । ९ तब उस ने उसे यरूशलेम में ले जाकर मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया और उससे कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को यहां से नीचे गिरा दे । १० क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें । ११ और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे पांव में पत्थर से ठेस लगे । १२ यीशु ने उस को उत्तर दिया यह भी कहा गया है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना । १३ जब शैतान सब परीक्षा कर चुका तब कुछ समय के लिये उस के पास से चला गया ॥

१४ फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा और उस की चरचा आस पास के सारे देश में फैल गई । १५ और वह उन की सभा के घरों में उपदेश करता रहा और सब उस की बड़ाई करते थे ॥

१६ और वह नासरत में आया जहां पाला गया था और अपनी रीति के अनुसार बिश्राम के दिन सभा के घर में जाकर पढ़ने को खड़ा हुआ । १७ यशायाह नबी की पुस्तक उसे दिई गई और उस ने पुस्तक खोलकर वह जगह निकाली

जहां यह लिखा था, १८ कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है इस लिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है और मुझे इस लिये भेजा है कि बन्धुओं को छुटकारे और अंधों को दृष्टि पाने का प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं। १९ और प्रभु के प्रसन्न रहने के बरस का प्रचार करूं। २० तब उस ने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दिई और बैठ गया और सभा के सब लोगों की आंखें उस पर लगी थीं। २१ तब वह उन से कहने लगा कि आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है। २२ और सब ने उसे सराहा और जो अनुग्रह की बातें उस के मुंह से निकलती थीं उन से अचम्भा किया और कहने लगे क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं। २३ उस ने उन से कहा तुम मुझ पर यह कहावत जरूर कहोगे कि हे वैद्य अपने आप को अच्छा कर। जो कुछ हम ने सुना कि कफरनहूम में किया गया वह यहां अपने देश में भी कर। २४ और उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कोई नबी अपने देश में मान सन्मान नहीं पाता। २५ और मैं तुम से सच कहता हूं कि एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन बरस आकाश बन्द रहा था यहां तक कि सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा तो इस्राईल में बहुत सी विधवा थीं। २६ पर एलिय्याह उन में से किसी के पास न भेजा गया केवल सैदा के सारफत में एक बिधवा के पास। २७ और इलीशा नबी के समय इस्रा-

ईल में बहुत कोढ़ी थे पर नामान सूरयानी को छोड़ उन में से कोई शुद्ध न किया गया । २८ ये बातें सुनते ही जितने सभा में थे सब क्रोध से भर गये । २९ और उठ कर उसे नगर से बाहर निकाला और जिस पहाड़ पर उन का नगर बसा था उस की चोटी पर ले चले कि उसे नीचे गिरा दें । ३० पर वह उन के बीच में से निकल कर चला गया ॥

३१ फिर वह गलील के कफरनहूम नगर में गया और विश्राम के दिन लोगों को उपदेश दे रहा था । ३२ वे उस के उपदेश से चकित हो गये क्योंकि उस का बचन अधिकार सहित था । ३३ सभा के घर में एक मनुष्य था जिस में अशुद्ध आत्मा था । ३४ वह ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा हे यीशु नासरी हमें तुझ से क्या काम । क्या तू हमें नाश करने आया है । मैं तुझे जानता हूं तू कौन है परमेश्वर का पवित्र जन । ३५ यीशु ने उसे डांट कर कहा चुप रह और उस में से निकल जा । तब दुष्टात्मा उसे बीच में पटक कर हानि पहुँचाये बिना उस से निकल गया । ३६ इस पर सब को अचम्भा हुआ और वे आपस में बातें कर के कहने लगे यह कैसा बचन है कि वह अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है और वे निकल जाते हैं । ३७ सो चारों ओर हर जगह उस की धूम मच गई ॥

३८ वह सभा के घर में से उठ कर शमौन के घर में गया और शमौन की सास को बड़ी तप चढ़ी हुई थी और

उन्हों ने उस के लिये उस से बिनती किई। ३९ उस ने उस के निकट खड़े हो कर तप को डांटा और वह उस पर से उतर गई और वह तुरन्त उठ कर उन की सेवा करने लगी॥

४० सूरज डूबते समय जिन के यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े थे वे सब उन्हें उस के पास लाए और उस ने एक एक पर हाथ रख कर उन्हें चंगा किया। ४१ और दुष्टात्मा भी चिल्लाते और यह कहते हुए कि तू परमेश्वर का पुत्र है बहुतों में से निकल गए पर वह उन्हें डांटता और बोलने न देता था क्योंकि वे जानते थे कि यह मसीह है॥

४२ जब दिन हुआ तो वह निकल कर एक जंगली जगह में गया और भीड़ की भीड़ उसे ढूंढ़ती हुई उस के पास आई और उसे रोकने लगी कि हमारे पास से न जा। ४३ पर उस ने उन से कहा मुझे और और नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हूँ॥

४४ सो वह गलील की सभा के घरों में प्रचार करता रहा॥

५. जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी और परमेश्वर का बचन सुनती थी और वह गन्नेसरत की झील के किनारे खड़ा था। २ तो उस ने झील के किनारे दो नावें लगी देखीं और मछुवे उन पर से उतर कर जाल धो रहे थे। ३ उन नावों में से एक पर जो

शमौन की थी चढ़कर उस ने उस से बिनती किई कि किनारे से थोड़ा हटा ले चल तब वह बैठकर लोगों को नाव पर से उपदेश करने लगा । ४ जब वह बातें कर चुका तो शमौन से कहा गहिरे में ले चल और मछलियां पकड़ने के लिये अपने जाल डालो । ५ शमौन ने उस को उत्तर दिया कि हे स्वामी हमने सारी रात मिहनत किई और कुछ न पकड़ा तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा । ६ जब उन्हों ने ऐसा किया तो बहुत मछलियां घेर लाए और उन के जाल फटने लगे । ७ इस पर उन्हों ने अपने साझियों को जो दूसरी नाव पर थे सैन किया कि आकर हमारी सहायता करो और उन्हों ने आकर दोनों नाव यहां तक भरी कि वे डूबने लगीं । ८ यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पांवों पर गिरा और कहा हे प्रभु मेरे पास से जा मैं पापी मनुष्य हूं ९ क्योंकि इतनी मछलियों के पकड़े जाने से उसे और उस के साथियों को बहुत अचम्भा हुआ । १० और वैसे ही जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी जो शमौन के साझी थे अचम्भा हुआ तब यीशु ने शमौन से कहा मत डर अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा । ११ और वे नावों को किनारे पर लाए और सब कुछ छोड़कर उस के पीछे हो लिए ॥

१२ जब वह किसी नगर में था तो देखो वहां कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य था और वह यीशु को देखकर मुंह के बल गिरा और बिनती किई कि हे प्रभु यदि तू चाहे तो

मुझे शुद्ध कर सकता है। १३ उस ने हाथ बढ़ा कर उसे छूआ और कहा मैं चाहता हूं शुद्ध हो जा और उस का कोढ़ तुरन्त जाता रहा। १४ तब उस ने उसे चिताया कि किसी से न कह पर जाके अपने आप को याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया उसे चढ़ा कि उन पर गवाही हो। १५ पर उस की चरचा और भी फैल गई और भीड़ की भीड़ उस की सुनने को और अपनी बीमारियों से चंगे होने के लिये इकट्ठी हुई। १६ पर वह जंगलों में अलग जाकर प्रार्थना करता था॥

१७ और एक दिन वह उपदेश कर रहा था और फरीसी और व्यवस्थापक वहां बैठे हुए थे जो गलील और यहूदिया के हर एक गांव से और यरूशलेम से आए थे और चंगा करने के लिये प्रभु की सामर्थ उस के साथ थी। १८ और देखो कई लोग एक मनुष्य को जो झोले का मारा था खाट पर लाए और वे उसे भीतर ले जाने और यीशु के साम्हने रखने का उपाय ढूंढ़ रहे थे। १९ और जब भीड़ के कारण उसे भीतर न ले जाने पाए तो उन्हों ने कोठे पर चढ़ के और खपड़े हटाकर उसे खाट समेत बीच में यीशु के सामने उतार दिया। २० उस ने उन का विश्वास देखकर उस से कहा हे मनुष्य तेरे पाप क्षमा हुए। २१ तब शास्त्री और फरीसी विचार करने लगे कि यह कौन है जो परमेश्वर की निन्दा करता है। परमेश्वर को छोड़ कौन पापों को क्षमा

कर सकता है। २२ यीशु ने उन के मन की बातें जान कर उन से कहा कि तुम अपने मनों में क्या विचार कर रहे हो। २३ सहज क्या है क्या यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए या यह कहना कि उठ और चल फिर। २४ पर इस लिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने उस झोले के मारे से कहा) मैं तुझ से कहता हूं उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा। २५ वह तुरन्त उन के सामने उठा और जिस पर वह पड़ा था उसे उठाकर परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ घर चला गया। २६ तब सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे और बहुत डर कर कहने लगे कि आज हम ने अनोखी बातें देखी॥

२७ और इस के पीछे वह बाहर गया और लेवी नाम एक महसूल लेनेवाले को महसूल की चौकी पर बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे हो ले। २८ तब वह सब कुछ छोड़ कर उठा और उस के पीछे हो लिया। २९ और लेवी ने अपने घर में उस के लिये बड़ी जेवनार किई और महसूल लेनेवालों और औरों की जो उस के साथ भोजन करने बैठे थे बड़ी भीड़ थी। ३० और फरीसी और उन के शास्त्री उस के चेलों से यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे कि तुम महसूल लेने-वालों और पापियों के साथ क्यों खाते पीते हो। ३१ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि वैद्य भले चंगों को नहीं पर

बीमारों को अवश्य है । ३२ मैं धर्मियों को नहीं पर पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूं । ३३ और उन्हों ने उस से कहा यूहन्ना के चेले बार बार उपवास और प्रार्थना किया करते हैं और वैसे ही फरीसियों के भी पर तेरे चेले खाते पीते हैं । ३४ यीशु ने उन से कहा क्या तुम बरातियों से जब तक दूलहा उन के साथ रहे उपवास करवा सकते हो । ३५ पर वे दिन आएंगे जिन में दूलहा उन से अलग किया जायगा तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे । ३६ उस ने एक दृष्टान्त भी उन से कहा कि कोई मनुष्य नए पहिरावन में से फाड़ कर पुराने पहिरावन में पैवन्द नहीं लगाता नहीं तो नया फटेगा और वह पैवन्द पुराने में मेल भी न खाएगा । ३७ और कोई नया दाख रस पुरानी मशकों में नहीं भरता नहीं तो नया दाख रस मशकों को फाड़कर बह जाएगा और मशकें भी नाश हो जाएंगी । ३८ पर नया दाख रस नई मशकों में भरना चाहिये । ३९ कोई मनुष्य पुराना दाख रस पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है पुराना ही अच्छा है ॥

६. १. फिर विश्राम के दिन वह खेतों से जा रहा था और उस के चेले बालें तोड़ तोड़कर और हाथों से मल मल कर खाते जाते थे । २ तब फरीसियों में से कई एक कहने लगे तुम वह काम क्यों करते हो जो विश्राम के दिन करना उचित नहीं । ३ यीशु ने उन को उत्तर दिया

क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा कि दाऊद ने जब वह और उस के साथी भूखे हुए तो क्या किया । ४ वह क्योंकर परमेश्वर के घर में गया और भेंट की रोटियां लेकर खाईं जिन्हें खाना याजकों को छोड़ और किसी को उचित नहीं और अपने साथियों को भी दीं । ५ और उस ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र विश्राम के दिन का भी प्रभु है ॥

६ किसी और विश्राम के दिन को वह सभा के घर में जाकर उपदेश करने लगा और वहां एक मनुष्य था जिस का दहिना हाथ सूखा था । ७ शास्त्री और फरीसी उस पर दोष लगाने का अवसर पाने के लिये उस की ताक में थे कि वह विश्राम के दिन में चङ्गा करेगा कि नहीं । ८ पर वह उन के विचार जानता था और सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा उठ बीच में खड़ा हो । वह उठ कर खड़ा हुआ । ९ यीशु ने उन से कहा मैं तुम से यह पूछता हूं विश्राम के दिन क्या उचित है भला करना या बुरा करना प्राण को बचाना या नाश करना । १० और उस ने चारों ओर उन सब को देखकर उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा । उस ने ऐसा किया और उस का हाथ फिर अच्छा हो गया । ११ पर वे आपे से बाहर होकर आपस में कहने लगे हम यीशु के साथ क्या करें ॥

१२ और उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई । १३ जब दिन हुआ तो उस ने अपने चेलों को

बुला कर उन में से बारह चुन लिए उन को प्रेरित कहा। १४ और वे ये हैं शमौन जिस का नाम उस ने पतरस भी रक्खा और उस का भाई अन्द्रियास और याकूब और यूहन्ना और फिलिप्पुस और बरतुलमै, १५ और मत्ती और तोमा और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन जो जेलोतेस कहलाता है, १६ और याकूब का बेटा यहूदा और यहूदा इसकरियोती जो उस का पकड़वानेवाला बना। १७ तब वह उन के साथ उतर कर चौरस जगह में खड़ा हुआ और उस के चेलों की बड़ी भीड़ और सारे यहूदिया और यरूशलेम और सूर और सैदा के समुद्र के किनारे से बहुतेरे लोग जो उस की सुनने और अपनी बीमारियों से चंगे हो जाने के लिए उस के पास आए थे। १८ और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुए लोग भी अच्छे किये जाते थे। १९ और सब उसे छूना चाहते थे क्योंकि उस से सामर्थ निकल कर सब को अच्छा करती थी॥

२० तब उस ने अपने चेलों की ओर देखकर कहा धन्य हो तुम जो दीन हो क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। २१ धन्य हो तुम जो अब भूखे हो क्योंकि तृप्त किये जाओगे धन्य हो तुम जो अब रोते हो क्योंकि हंसोगे। २२ धन्य हो तुम जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से बैर करेंगे और तुम्हें निकाल देंगे और तुम्हारी निन्दा करेंगे और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे। २३ उस दिन आनन्द होकर

उछलना क्योंकि देखो तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है उन के बाप दादे नबियों के साथ वैसा ही किया करते थे। २४ परन्तु हाय तुम पर जो धनवान हो क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके। २५ हाय तुम पर जो अब भरपूर हो क्योंकि भूखे होगे। हाय तुम पर जो अब हंसते हो क्योंकि शोक करोगे और रोओगे। २६ हाय तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें। उन के बाप दादे झूठे नबियों के साथ वैसा ही किया करते थे॥

२७ पर मैं तुम सुननेवालों से कहता हूं कि अपने शत्रुओं से प्रेम रक्खो जो तुम से बैर करें उन का भला करो। २८ जो तुम्हें स्राप दें उन को आशीष दो और जो तुम्हारा अपमान करें उन के लिये प्रार्थना करो। २९ जो तेरे एक गाल पर मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे और जो तेरी दोहर छीन ले उस को कुरता लेने से भी न रोक। ३० जो कोई तुझ से मांगे उसे दे और जो तेरी वस्तु छीन ले उस से न मांग। ३१ और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें तुम भी उन के साथ वैसा ही करो। ३२ यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रक्खो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखते हैं। ३३ और यदि तुम अपने भलाई करनेवालों ही के साथ भलाई करते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं। ३४ और यदि

तुम उन्हें उधार दो जिन से फिर पाने की आस रखते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी पापियों को उधार देते हैं कि उतना ही फिर पाएं। ३५ पर अपने शत्रुओं से प्रेम रक्खो और भलाई करो और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो और तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा और तुम परम प्रधान के सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है। ३६ जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो। ३७ दोष न लगाओ तो तुम पर भी दोष न लगाया जाएगा दोषी न ठहराना तो तुम भी दोषी न ठहराए जाओगे। क्षमा करो तो तुम्हारी भी क्षमा किई जाएगी। ३८ दिया करो तो तुम्हें भी दिया जाएगा लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिला कर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा॥

३९ फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा क्या अंधा अंधे को मार्ग बता सकता है क्या दोनों गड़हे में न गिरेंगे। ४० चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं पर जो कोई सिद्ध होगा वह अपने गुरु के समान होगा। ४१ तू अपने भाई की आंख के तिनके को क्यों देखता है और अपनी ही आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता। ४२ और जब तू अपनी ही आंख का लट्ठा नहीं देखता तो अपने भाई से क्योंकर कह सकता है हे भाई

ठहर जा तेरी आंख से तिनके को निकाल दूं । हे कप
अपनी आंख से लट्ठा निकाल तब जो तिनका तेरे
आंख में है भली भांति देखकर निकाल सकेगा । ४३ कोई
अच्छा पेड़ नहीं जो निकम्मा फल लाए और न कोई निकम्मा
पेड़ है जो अच्छा फल लाए । ४४ हर एक पेड़ अपने फल
से पहचाना जाता है क्योंकि लोग झाड़ियों से अंजीर नहीं
तोड़ते और न झड़बेरी से अंगूर । ४५ भला मनुष्य अपने
मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है और बुरा
मनुष्य अपने मन के बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता
है क्योंकि जो मन में भरा है वही उस के मुंह पर
आता है ॥

४६ जब तुम मेरा कहा नहीं मानते तो क्यों मुझे हे
प्रभु हे प्रभु कहते हो । ४७ जो कोई मेरे पास आता है और
मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है मैं तुम्हें बताऊंगा वह किस
के समान है । ४८ वह उस मनुष्य के समान है जिस ने घर
बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चटान पर नेव डाली और
जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी पर उसे हिला न
सकी क्योंकि वह पक्का बना था । ४९ पर जो सुन कर नहीं
मानता वह उस मनुष्य के समान है जिस ने मिट्टी पर बिना
नेव का घर बनाया । जब उस पर धारा लगी तो वह तुरन्त
गिर पड़ा और वह गिरकर सत्यानाश हो गया ॥

७. जब वह लोगों को अपनी सारी बातें सुना चुका तो कफरनहूम में आया। २ और किसी सूबेदार का एक दास जो उस का प्रिय था बीमारी से मरने पर था। ३ उस ने यीशु की चरचा सुन कर यहूदिया के कई पुरनियों को उस से यह बिनती करने को उस के पास भेजा कि आकर मेरे दास को चंगा कर। ४ वे यीशु के पास आकर उस से बड़ी बिनती करके कहने लगे कि वह इस योग्य है कि तू उस के लिये यह करे, ५ क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है और उसी ने हमारा सभा का घर बनाया है। ६ यीशु उन के साथ साथ चला पर जब वह घर से दूर न था तो सूबेदार ने उस के पास कई मित्रों के द्वारा कहला भेजा कि हे प्रभु दुख न उठा क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत तले आए। ७ इसी कारण मैं ने अपने आप को इस योग्य भी न समझा कि तेरे पास आऊं पर बचन ही कह तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। ८ मैं भी पराधीन मनुष्य हूं और सिपाही मेरे हाथ में हैं और जब एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ तो वह आता है और अपने दास को कि यह कर तो वह करता है। ९ यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया और उस ने मुंह फेरकर उस भीड़ से जो उस के पीछे आ रही थी कहा मैं तुम से कहता हूं कि मैं ने इस्राईल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया। १० और भेजे हुए लोगों ने घर लौटकर उस दास को चंगा पाया॥

११ थोड़े दिन के पीछे वह नाईन नाम एक नगर को गया और उस के चेले और बड़ी भीड़ उस के साथ जा रही थी। १२ जब वह नगर के फाटक के पास पहुँचा तो देखो एक मुरदे को बाहर लिये जाते थे जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था और वह बिधवा थी और नगर के बहुतेरे लोग उस के साथ थे। १३ उसे देखकर प्रभु को तरस आया और उस से कहा मत रो। १४ तब उस ने पास आकर अर्थी को छूआ और उठानेवाले ठहर गए तब उस ने कहा हे जवान मैं तुझ से कहता हूं उठ। १५ तब मुरदा उठ बैठा और बोलने लगा और उस ने उसे उस की मां को सौंप दिया। १६ इस से सब पर भय छा गया और वे परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हमारे बीच में एक बड़ा नबी उठा है और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि किई है। १७ और उस के विषय में यह बात सारे यहूदिया और आस पास के सारे देश में फैल गई॥

१८ और यूहन्ना को उस के चेलों ने इन सब बातों का समाचार दिया। १९ तब यूहन्ना ने अपने चेलों में से दो को बुलाकर प्रभु के पास यह पूछने को भेजा कि आनेवाला तू ही है या हम दूसरे की आस रक्खें। २० उन्हों ने उस के पास आकर कहा यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है कि आनेवाला तू ही है या हम दूसरे की बाट जोहें। २१ उसी घड़ी उस ने बहुतों को बीमारियों

और पीड़ाओं और दुष्टात्माओं से छुड़ाया और बहुत से अंधों को आंखें दिईं। २२ और उस ने उन से कहा जो कुछ तुम ने देखा और सुना है जाकर यूहन्ना से कह दो कि अंधे देखते लंगड़े चलते फिरते कोढ़ी शुद्ध किए जाते बहिरे सुनते मुरदे जिलाए जाते हैं और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। २३ और धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर न खाए॥

२४ जब यूहन्ना के भेजे हुए लोग चल दिए तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने गये थे क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को। २५ फिर तुम क्या देखने गए थे क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को। देखो जो भड़कीला वस्त्र पहिनते और सुख बिलास से रहते हैं वे राजभवनों में रहते हैं। २६ तो क्या देखने गए थे क्या किसी नबी को। हां मैं तुम से कहता हूं बरन नबी से भी बड़े को। २७ यह वही है जिस के विषय में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा मार्ग सुधारेगा। २८ मैं तुम से कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं पर जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है। २९ और सब साधारण लोगों ने सुनकर और महसूल लेनेवालों ने भी यूहन्ना का बपतिसमा लेकर परमेश्वर को सच्चा मान लिया। ३० पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने

उस से बपतिसमा न लेकर परमेश्वर की मनसा को अपने विषय में टाल दिया । ३१ सो मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूं वे किस के समान हैं । ३२ वे उन बालकों के समान हैं जो बाजार में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे हम ने बिलाप किया और तुम न रोए । ३३ क्योंकि यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला न रोटी खाता न दाख रस पीता आया और तुम कहते हो उस में दुष्टात्मा है । ३४ मनुष्य का पुत्र खाता पीता आया है और तुम कहते हो देखो पेटू और पियक्कड़ मनुष्य महसूल लेनेवालों और पापियों का मित्र । ३५ पर ज्ञान अपने सब सन्तानों से सच्चा ठहराया गया है ॥

३६ फिर किसी फरीसी ने उस से बिनती की कि मेरे साथ भोजन कर सो वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा । ३७ और देखो उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है संगमरमर के पात्र में अतर लाई । ३८ और उस के पावों के पास पीछे खड़ी होकर रोती हुई उस के पांवों को आंसुओं से भिगाने लगी और अपने सिर के बालों से पोंछे और उस के पांव बार बार चूम कर उन पर अतर मला । ३९ यह देखकर वह फरीसी जिस ने बुलाया था अपने मन में सोचने लगा यदि यह नबी होता तो जान जाता कि यह जो उसे छू रही है सो कौन और कैसी स्त्री है क्योंकि वह पापिनी है ।

४० यह सुन यीशु ने उस से उत्तर दे कहा कि हे शमौन मुझे तुझ से कुछ कहना है वह बोला हे गुरु कह। ४१ किसी महाजन के दो देनदार थे एक पांच सौ और दूसरा पचास दीनार धारता था। ४२ जब कि उन के पास पटाने को कुछ न रहा तो उस ने दोनों को क्षमा कर दिया सो उन में से कौन उस से अधिक प्रेम रक्खेगा। ४३ शमौन ने उत्तर दिया मेरी समझ में वह जिस का उस ने अधिक छोड़ दिया। उस ने उस से कहा तू ने ठीक विचार किया है। ४४ और उस स्त्री की ओर फिर कर उस ने शमौन से कहा क्या तू इस स्त्री को देखता है। मैं तेरे घर में आया तू ने मेरे पांव धोने को पानी न दिया पर इस ने मेरे पांव आंसुओं से भिगाए और अपने बालों से पोंछे। ४५ तू ने मुझे चूमा न दिया पर जब से मैं आया तब से इस ने मेरे पांवों का चूमना न छोड़ा। ४६ तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला पर इस ने मेरे पांवों पर अतर मला है। ४७ इस लिये मैं तुझ से कहता हूं कि उस के पाप जो बहुत थे क्षमा हुये कि इस ने तो बहुत प्रेम किया पर जिस का थोड़ा क्षमा हुआ वह थोड़ा प्रेम करता है। ४८ और उस ने स्त्री से कहा तेरे पाप क्षमा हुये। ४९ तब जो लोग उस के साथ भोजन करने बैठे थे वे अपने अपने मन में सोचने लगे यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है। ५० पर उस ने स्त्री से कहा तेरे बिश्वास ने तुझे बचा लिया है कुशल से चली जा॥

इस के पीछे वह नगर नगर और गांव गांव प्रचार करता हुआ और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ फिरने लगा। २ और वे बारह उस के साथ थे और कितनी स्त्रियां भी जो दुष्टात्माओं से और बीमारियों से छुड़ाई गई थीं और वे ये हैं मरयम जो मगद्‌-लीनी कहलाती थी जिस में से सात दुष्टात्मा निकले थे। ३ और हेरोदेस के भण्डारी खूजा की पत्नी योअन्ना और सूसन्नाह और बहुत सी स्त्रियां ये तो अपनी सम्पत्ति से उस की सेवा करती थीं॥

४ जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई और नगर नगर के लोग उस के पास चले आते थे तो उस ने दृष्टान्त में कहा, ५ कि एक बोने वाला बीज बोने निकला। बोते हुये कुछ मार्ग के किनारे गिरा और रौंदा गया और आकाश के पक्षियों ने उसे चुग लिया। ६ और कुछ चट्टान पर गिरा और उपजा पर तरी न पाने से सूख गया। ७ कुछ झाड़ियों के बीच में गिरा और झाड़ियों ने साथ साथ बढ़ कर उसे दबा लिया। ८ और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और उग कर सौ गुना फल लाया। यह कह कर उस ने ऊंचे शब्द से कहा जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले॥

९ उस के चेलों ने उस से पूछा कि यह दृष्टान्त क्या है। १० उस ने कहा तुम को परमेश्वर के राज्य के भेदों की समझ दिई गई है पर औरों को दृष्टान्तों में सुनाया जाता है

इस लिये कि वे देखते हुए न देखें और सुनते हुए न समझें। ११ दृष्टान्त यह है बीज तो परमेश्वर का बचन है। १२ मार्ग के किनारे के वे हैं जिन्हों ने सुना तब शैतान आकर उन के मन में से बचन उठा ले जाता है ऐसा न हो कि वे विश्वास कर के उद्धार पाएं। १३ चटान पर के वे हैं कि जब सुनते हैं तो आनन्द से बचन को ग्रहण करते हैं पर जड़ न रखने से वे थोड़ी देर तक विश्वास रखते हैं और परीक्षा के समय बहक जाते हैं। १४ जो झाड़ियों में गिरा सो वे हैं जो सुनते हैं पर होते होते चिन्ता और धन और जीवन के सुख बिलास में फंस जाते हैं और उन का फल नहीं पकता। १५ पर अच्छी भूमि में के वे हैं जो बचन सुन कर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं और धीरज से फल लाते हैं॥

१६ कोई दिया बार के बरतन से नहीं छिपाता न खाट के नीचे रखता है पर दीवट पर रखता है कि भीतर आने वाले उजाला पाएं। १७ कुछ छिपा नहीं जो प्रगट न हो और न कुछ गुप्त है जो जाना न जाये और प्रगट न हो। १८ इस लिये चौकस रहो कि तुम किस रीति से सुनते हो क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और जिस के पास नहीं है उस से वह भी ले लिया जाएगा जो अपना समझता है॥

१९ उस की माता और उस के भाई उस के पास आए पर भीड़ के कारण उस से भेंट न कर सके। २० और उस

से कहा गया कि तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हुए तुझ से मिलना चाहते हैं। २१ उस ने उत्तर दे उन से कहा कि मेरी माता और मेरे भाई ये ही हैं जो परमेश्वर का बचन सुनते और मानते हैं॥

२२ फिर एक दिन वह और उस के चेले नाव पर चढ़े और उस ने उन से कहा कि आओ झील के पार चलें सो उन्हों ने नाव खोल दी। २३ पर जब नाव चल रही थी तो वह सो गया और झील पर आंधी आई और नाव पानी से भरी जाती थी और वे जोखिम में थे। २४ तब उन्हों ने पास आकर उसे जगाया और कहा स्वामी स्वामी हम नाश हुये जाते हैं। तब उस ने उठ कर आंधी को और पानी के हिलकोरों को डांटा और वे थम गये और चैन हो गया। २५ और उस ने उन से कहा तुम्हारा विश्वास कहां था पर वे डर गये और अचम्भित हो आपस में कहने लगे यह कौन है जो आंधी और पानी को भी आज्ञा देता है और वे उस की मानते हैं॥

२६ फिर वे गिरासेनियों के देश में पहुँचे जो उस पार गलील के सामने है। २७ जब वह किनारे पर उतरा तो उस नगर का एक मनुष्य उसे मिला जिस में दुष्टात्मा थे और बहुत दिनों से न कपड़े पहिनता न घर में रहता बल्कि क़बरों में रहा करता था। २८ वह यीशु को देख कर चिल्लाया और उस के सामने गिर कर ऊंचे शब्द से कहा हे परम

प्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु मुझे तुझ से क्या काम मैं तेरी बिनती करता हूं मुझे पीड़ा न । २९ क्योंकि वह उस अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा था क्योंकि वह उस पर बार बार प्रबल होता था और यद्यपि लोग उसे सांकलों और बेड़ियों से बांधते थे तौ भी वह बंधनों को तोड़ डालता था और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाये फिरता था। ३० यीशु ने उस से पूछा तेरा क्या नाम है उस ने कहा सेना क्योंकि बहुत दुष्टात्मा उस में पैठ गये थे। ३१ और उन्हों ने उस से बिनती की कि हमें अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे। ३२ वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था सो उन्हों ने उस से बिनती की हमें उन में पैठने दे सो उस ने उन्हें जाने दिया। ३३ तब दुष्टात्मा उस मनुष्य से निकल कर सूअरों में पैठे और वह झुण्ड कड़ाड़े पर से झपट कर झील में जा पड़ा और डूब मरा। ३४ चरवाहे यह जो हुआ था देख कर भागे और नगर में और गांवों में जाकर उस का समाचार कहा। ३५ और लोग यह जो हुआ था देखने को निकले और यीशु के पास आकर जिस मनुष्य से दुष्टात्मा निकले थे उसे यीशु के पांवों के पास कपड़े पहिने और सचेत बैठे हुए पाकर डर गए। ३६ और देखनेवालों ने उन को बताया कि वह दुष्टात्मा का सताया हुआ मनुष्य क्योंकर बच गया था। ३७ तब गिरासेनियों के आस पास

के सारे लोगों ने यीशु से बिनती किई कि हमारे यहां से चला जा क्योंकि उन पर बड़ा भय छा गया था सो वह नाव पर चढ़ के लौट गया। ३८ जिस मनुष्य से दुष्टात्मा निकले थे वह उस से बिनती करने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे पर यीशु ने उसे बिदा करके कहा, ३९ अपने घर को लौट कर कह दे कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं। वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किए॥

४० जब यीशु लौट रहा था तो लोग उस से आनन्द के साथ मिले क्योंकि वे सब उस की बाट जोह रहे थे। ४१ और देखो याईर नाम एक मनुष्य जो सभा का सरदार था आया और यीशु के पांवों पड़ के उस से बिनती करने लगा कि मेरे घर चल। ४२ क्योंकि उस के बारह बरस की एकलौती बेटी थी और वह मरने पर थी। जब वह जा रहा था तो लोग उस पर गिरे पड़ते थे॥

४३ और एक स्त्री ने जिस को बारह बरस से लोहू बहने का रोग था और जो अपनी सारी जीविका वैद्यों के पीछे उठाकर भी किसी के हाथ से अच्छी न हो सकी थी, ४४ पीछे से आकर उस के वस्त्र के आंचल को छूआ और तुरन्त उस का लोहू बहना थम गया। ४५ इस पर यीशु ने कहा मुझे किस ने छूआ जब सब मुकरने लगे तो पतरस और उस के साथियों ने कहा हे स्वामी तुझे भीड़ दबा रही और

तुझ पर गिरी पड़ती है। ४६ पर यीशु ने कहा किसी ने मुझे छूआ क्योंकि मैं ने जाना कि मुझ से सामर्थ निकली है। ४७ जब स्त्री ने देखा कि मैं छिप नहीं सकती तब कांपती हुई आई और उस के पांवों पर गिर कर सब लोगों के सामने बताया कि मैं ने किस कारण से तुझे छूआ और क्योंकर तुरन्त चंगी हुई। ४८ उस ने उस से कहा बेटी तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से चली जा॥

४९ वह यह कह ही रहा था कि किसी ने सभा के घर के सरदार के यहां से आकर कहा तेरी बेटी मर गई गुरु को दुख न दे। ५० यीशु ने सुन कर उसे उत्तर दिया मत डर केवल बिश्वास रख तो वह बच जाएगी। ५१ घर में आकर उस ने पतरस और यूहन्ना और याकूब और लड़की के माता पिता को छोड़ किसी को अपने साथ भीतर आने न दिया। ५२ और सब उस के लिये रो पीट रहे थे पर उस ने कहा रोओ मत वह मरी नहीं पर सोती है। ५३ वे यह जान कर कि मर गई है उस की हंसी करने लगे। ५४ पर उस ने उस का हाथ पकड़ा और पुकार कर कहा हे लड़की उठ। ५५ तब उस का प्राण फिर आया और वह तुरन्त उठी फिर उस ने आज्ञा दी कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। ५६ उस के माता पिता चकित हुए पर उस ने उन्हें चिताया कि यह जो हुआ है किसी से न कहना॥

९. फिर उस ने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया । २ और उन्हें परमेश्वर का राज्य प्रचार करने और बीमारों को अच्छा करने के लिए भेजा । ३ और उस ने उन से कहा मार्ग के लिए कुछ न लेना न लाठी न झोली न रोटी न रुपये न दो दो कुरते । ४ और जिस किसी घर मे तुम उतरो वहीं रहो और वहीं से बिदा हो । ५ जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़ डालो कि उन पर गवाही हो । ६ सो वे निकल कर गांव गांव सुसमाचार सुनाते और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए फिरते थे ॥

७ और देश की चौथाई का राजा हेरोदेस यह सब सुन कर घबरा गया क्योंकि कितनों ने कहा यूहन्ना मुरदों मे से जी उठा है । ८ और कितनों ने यह कि एलियाह दिखाई दिया है और औरों ने यह कि पुराने नबियों में से कोई जी उठा है । ९ पर हेरोदेस ने कहा यूहन्ना का तो मै ने सिर कटवाया अब यह कौन है जिस के विषय मैं ऐसी बातें सुनता हूं । और उस ने उसे देखना चाहा ॥

१० फिर प्रेरितों ने लौट कर जो कुछ उन्हों ने किया था उस को बता दिया और वह उन्हें अलग करके बैतसैदा नाम एक नगर को ले गया । ११ भीड़ यह जान कर उस के पीछे हो ली और वह आनन्द के साथ उन से मिला और

उन से परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगा और जो चंगे होना चाहते थे उन्हें चंगा किया। १२ जब दिन ढलने लगा तो बारहों ने आकर उस से कहा भीड़ को बिदा कर कि चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाकर टिकें और भोजन का उपाय करें क्योंकि हम यहां सुनसान जगह में हैं। १३ उस ने उन से कहा तुम ही उन्हें खाने को दो उन्हों ने कहा हमारे पास पांच रोटियां और दो मछली छोड़ और कुछ नहीं पर हां यदि हम जाकर इन सब लोगों के लिए भोजन मोल लें तो हो। वे लोग तो पांच हज़ार पुरुषों के लगभग थे। १४ तब उस ने अपने चेलों से कहा उन्हें पचास पचास करके पांति पांति बैठा दो। १५ उन्हों ने ऐसा ही किया और सब को बैठा दिया। १६ तब उस ने वे पांच रोटियां और दो मछली लिईं और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और तोड़ तोड़कर चेलों को देता गया कि लोगों को परोसें। १७ सो सब खाकर तृप्त हुए और बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरी भर कर उठाईं॥

१८ जब वह एकान्त में प्रार्थना कर रहा था और चेले उस के साथ थे तो उस ने उन से पूछा कि लोग मुझे क्या कहते हैं। १९ उन्हों ने उत्तर दिया यूहन्ना बपतिसमा देने-वाला और कोई कोई एलिय्याह और कोई यह कि पुराने नबियों में से कोई जी उठा है। २० उस ने उन से पूछा फिर तुम मुझे क्या कहते हो। पतरस ने उत्तर दिया परमेश्वर का

मसीह । २१ तब उस ने उन्हें चिता कर कहा कि यह किसी से न कहना । २२ और उस ने कहा मनुष्य के पुत्र के लिए अवश्य है कि वह बहुत दुख उठाए और पुरनिए और महा-याजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझ कर मार डालें और वह तीसरे दिन जी उठे । २३ उस ने सब से कहा यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपे को नकारे और दिन दिन अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले । २४ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा पर जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोए वही उसे बचाएगा । २५ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण खोए या उस की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा । २६ जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा मनुष्य का पुत्र भी जब अपनी और अपने पिता की और पवित्र स्वर्ग दूतों की महिमा सहित आएगा तो उस से लजाएगा । २७ मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई ऐसे हैं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें तब तक मौत का स्वाद न चक्खेंगे ॥

२८ इन बातों के कोई आठ दिन पीछे वह पतरस और यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने को पहाड़ पर गया । २९ जब वह प्रार्थना कर रहा था तो उस के मुंह का रूप और ही हो गया और उस का वस्त्र उजला होकर चमकने लगा । ३० और देखो मूसा और एलिय्याह ये दो

पुरुष उस के साथ बातें कर रहे थे। ३१ ये महिमा सहित दिखाई दिए और उस के मरने की चर्चा कर रहे थे जो यरूशलेम में होनेवाला था। ३२ पतरस और उस के साथी नींद से भरे थे और जब अच्छी तरह सचेत हुए तो उस की महिमा और उन दो पुरुषों को जो उस के साथ खड़े थे देखा। ३३ जब वे उस के पास से जाने लगे तो पतरस ने यीशु से कहा हे स्वामी हमारा वहां रहना अच्छा है सो हम तीन मण्डप बनाएं एक तेरे लिये एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये। वह जानता न था कि क्या कह रहा है। ३४ वह यह कह ही रहा था कि एक बादल ने आकर उन्हें छा लिया और जब वे उस बादल से घिरने लगे तो डर गये। ३५ और उस बादल में से यह शब्द निकला कि यह मेरा पुत्र मेरा चुना हुआ है इस की सुनो। ३६ यह शब्द होते ही यीशु अकेला पाया गया। और वे चुप रहे और जो कुछ देखा था उस की कोई बात उन दिनों में किसी से न कही॥

३७ और दूसरे दिन जब वे पहाड़ से उतरे तो एक बड़ी भीड़ उस से आ मिली। ३८ और देखो भीड़ में से एक मनुष्य ने चिल्ला कर कहा हे गुरु मैं तुझ से बिनती करता हूं कि मेरे पुत्र पर कृपा दृष्टि कर क्योंकि वह मेरा एकलौता है। ३९ और देख एक दुष्टात्मा उसे पकड़ता है और वह एकाएक चिल्ला उठता है और वह उसे ऐसा मरोड़ता है कि वह मुंह

में फेन भर लाता है और उसे कुचलकर कठिनाई से छोड़ता है। ४० और मैं ने तेरे चेलों से बिनती किई कि उसे निकालें पर वे न निकाल सके। ४१ यीशु ने उत्तर दिया हे अविश्वासी और हठीले लोगो मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हारी सहूंगा। ४२ अपने पुत्र को यहां ले आ। वह आता ही था कि दुष्टात्मा ने उसे पटककर मरोड़ा पर यीशु ने अशुद्ध आत्मा को डांटा और लड़के को अच्छा करके उस के पिता को सौंप दिया। ४३ तब सब लोग परमेश्वर की महासामर्थ से चकित हुए॥

४४ पर जब सब लोग उन सारे कामों से जो वह करता था अचम्भा कर रहे थे तो उस ने अपने चेलों से कहा ये बातें तुम्हारे कानों में पड़ी रहें क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाने को है। ४५ पर वे इस बात को न समझते थे और यह उन से छिपी रही कि वे उसे जानने न पाएं और वे इस बात के विषय में उस से पूछने से डरते थे॥

४६ फिर उन में यह विवाद होने लगा कि हम में से बड़ा कौन है। ४७ पर यीशु ने उन के मन का विचार जान लिया और एक बालक को लेकर अपने पास खड़ा किया। ४८ और उन से कहा जो कोई मेरे नाम से इस बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है। जो तुम सब में छोटे से छोटा है वही बड़ा है॥

४९ तब यूहन्ना ने कहा हे स्वामी हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और हम ने उसे मना किया क्योंकि वह हमारे साथ होकर तेरे पीछे नहीं हो लेता। ५० यीशु ने उस से कहा उसे मना मत करो क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं वह तुम्हारी ओर है॥

५१ जब उस के ऊपर उठाए जाने के दिन पूरे होने पर थे तो उस ने यरूशलेम जाने को अपना मन दृढ़ किया। और उस ने अपने आगे दूत भेजे। ५२ वे सामरियों के एक गांव में गये कि उस के लिये जगह तैयार करें। ५३ पर उन लोगों ने उसे उतरने न दिया क्योंकि वह यरूशलेम को जा रहा था। ५४ यह देख कर उस के चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा हे प्रभु क्या तू चाहता है कि हम आज्ञा दें कि आकाश से आग गिरे और उन्हें भसम कर दे। ५५ पर उस ने फिर कर उन्हें डांटा। ५६ और वे किसी और गांव में चले गये॥

५७ जब वे मार्ग में चले जाते थे तो किसी ने उस से कहा जहां जहां तू जाएगा मैं तेरे पीछे हो लूंगा। ५८ यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों के भट और आकाश के पंछियों के बसेरे होते हैं पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं। ५९ उस ने दूसरे से कहा मेरे पीछे हो ले उस ने कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं। ६० उस ने उस से कहा मरे हुओं को अपने मरे हुओं को

गाड़ने दे पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना। ६१ एक और ने भी कहा हे प्रभु मैं तेरे पीछे हो लूंगा पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से बिदा हो आऊं। ६२ यीशु ने उस से कहा जो कोई अपना हाथ हल पर रख कर पीछे देखता है वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं॥

१०. और इन बातों के पीछे प्रभु ने सत्तर और मनुष्य ठहराए और जिस जिस नगर और जगह वह आप जाने पर था वहां उन्हें दो दो कर के अपने आगे भेजा। २ और उस ने उन से कहा पक्के खेत बहुत हैं पर मजदूर थोड़े इस लिये खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे। ३ जाओ देखो मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेड़ियों के बीच में भेजता हूं। ४ न बटुआ न झोली न जूते लो और न रास्ते में किसी को नमस्कार करो। ५ जिस किसी घर में जाओ पहिले कहो कि इस घर पर कल्याण हो। ६ यदि वहां कोई कल्याण के योग्य होगा तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा नहीं तो तुम्हारे पास लौट आएगा। ७ उसी घर में रहो और जो कुछ उन से मिले वही खाओ पीओ क्योंकि मजदूर को अपनी मजदूरी मिलनी चाहिए। घर घर न फिरना। ८ और जिस नगर में जाओ और वहां के लोग तुम्हें उतारें तो जो कुछ तुम्हारे सामने रक्खा जाए खाओ।

९ वहां के बीमारों को चंगा करो और उन से कहो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है। १० पर जिस नगर में जाओ और वहां के लोग तुम्हें ग्रहण न करें तो उस के बाजारों में जाकर कहो, ११ कि तुम्हारे नगर की धूल भी जो हमारे पांवों में लगी है हम तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं तौभी यह जान लो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है। १२ मैं तुम से कहता हूं कि उस दिन उस नगर की दशा से सदोम की दशा सहने योग्य होगी। १३ हाय खुराजीन हाय बैतसैदा जो सामर्थ के काम तुम में किए गए यदि वे सूर और सैदा में किए जाते तो टाट ओढ़-कर और राख में बैठकर वे कब के मन फिराते। १४ पर न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा सहने योग्य होगी। १५ और हे कफरनहूम क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा। १६ जो तुम्हारी सुनता है वह मेरी सुनता है और जो तुम्हें तुच्छ जानता है वह मुझे तुच्छ जानता है और जो मुझे तुच्छ जानता है वह मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है॥

१७ वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे हे प्रभु तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे बश में हैं। १८ उस ने उन से कहा मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। १९ देखो मैं ने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया

है और किसी बस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी । २० तौभी इस से आनन्द मत हो कि आत्मा तुम्हारे बश में हैं पर इस से आनन्द हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं ॥

२१ उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में होकर आनन्द से भर गया और कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रक्खा और बालकों पर प्रकट किया हां हे पिता क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा । २२ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है और कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है केवल पिता और पिता कौन है यह भी कोई नहीं जानता केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे । २३ और चेलों की ओर फिरकर निराले में कहा धन्य हैं वे आंखें जो ये बातें जो तुम देखते हो देखती हैं । २४ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बहुत से नबियों और राजाओं ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो देखें पर न देखीं और जो बातें तुम सुनते हो सुनें पर न सुनीं ॥

२५ और देखो एक व्यवस्थापक उठा और यह कहकर उस की परीक्षा करने लगा कि हे गुरु अनन्त जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूं । २६ उस ने उस से कहा कि व्यवस्था में क्या लिखा है तू कैसे पढ़ता है । २७ उस ने उत्तर दिया कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे जी और अपनी सारी शक्ति और अपनी

सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख । २८ उस ने उस से कहा तू ने ठीक उत्तर दिया यही कर तो तू जीएगा । २९ पर उस ने अपनो तईं धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा तो मेरा पड़ोसी कौन है । ३० यीशु ने उत्तर दिया कि एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था कि डाकुओं ने घेरकर उस के कपड़े उतार लिए और मारपीट कर उसे अधमूआ छोड़ चले गए । ३१ और ऐसा हुआ कि उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था पर उसे देख के कतराकर चला गया । ३२ इसी रीति से एक लेवी उस जगह आया वह भी उसे देख के कतरा कर चला गया । ३३ पर एक सामरी बटोही वहां आ निकला और उसे देखकर तरस खाया । ३४ और उस के पास आकर और उस के घावों पर तेल और दाखरस ढालकर पट्टियां बांधीं और अपनी सवारी पर चढ़ा कर सराय में ले गया और उस की सेवा टहल किई । ३५ दूसरे दिन उस ने दो दीनार निकालकर भटियारे को दिए और कहा इस की सेवा टहल करना और जो कुछ तेरा और लगेगा वह मैं लौटने पर तुझे भर दूंगा । ३६ अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था इन तीनों में से उस का पड़ोसी कौन ठहरा । उस ने कहा वही जिस ने उस पर तरस खाया । ३७ यीशु ने उस से कहा जा तू भी ऐसा ही कर ॥

३८ फिर जब वे जा रहे थे तो वह एक गांव में गया और मरथा नाम एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा। ३९ और मरयम नाम उस की एक बहिन थी वह प्रभु के पांवों के पास बैठ कर उस का बचन सुनती थी। ४० पर मरथा सेवा करते करते घबरा गई और उस के पास आकर कहने लगी हे प्रभु क्या तुझे कुछ सोच नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली छोड़ दी है सो उस से कह कि मेरी सहायता करे। ४१ प्रभु ने उसे उत्तर दिया मरथा हे मरथा तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। पर एक बात अवश्य है और उस उत्तम भाग को मरयम ने चुन लिया है जो उस से छीना न जाएगा॥

११. वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था। जब वह कर चुका तो उस के चेलों में से एक ने उस से कहा हे प्रभु जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया वैसे ही तू भी हमें सिखा दे। २ उस ने उन से कहा जब तुम प्रार्थना करो तो कहो हे पिता तेरा नाम पवित्र माना जाए तेरा राज्य आए। ३ हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया कर। ४ और हमारे पापों को क्षमा कर क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं और हमें परीक्षा में न ला॥

५ और उस ने उन से कहा तुम में से कौन है कि उस का एक मित्र हो और वह आधी रात को उस के पास जाकर

उस से कहे कि हे मित्र मुझे तीन रोटियां दे। ६ क्योंकि एक बटोही मित्र मेरे पास आया है और उस के आगे रखने को मेरे पास कुछ नहीं। ७ और वह भीतर से उत्तर दे कि मुझे दुख न दे अब तो द्वार बन्द है और मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर हैं सो मैं उठकर तुझे दे नहीं सकता। ८ मैं तुम से कहता हूं यदि उस का मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे तौभी उस के लाज छोड़कर मांगने के कारण उसे जितनी दरकार हो उतनी उठकर देगा। ९ और मैं तुम से कहता हूं कि मांगो तो तुम्हें दिया जायगा, ढूँढो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। १० क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है, और जो ढूँढ़ता है वह पाता है, और जो खटखटाता है उस के लिये खोला जायगा। ११ तुम में से ऐसा कौन पिता होगा कि जब उस का पुत्र रोटी मांगे तो उसे पत्थर दे या मछली मांगे तो मछली के बदले उसे सांप दे। १२ या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे। १३ सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के बालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा॥

१४ फिर वह एक गंगे दुष्टात्मा को निकाल रहा था। जब दुष्टात्मा निकल गया तो गूंगा बोलने लगा और लोगों ने अचम्भा किया। १५ पर उन में से कितनों ने कहा यह तो शैतान नाम दुष्टात्माओं के प्रधान की सहायता से

दुष्टात्मा को निकालता है । १६ औरों ने उस की परीक्षा करने को उस से आकाश का एक चिन्ह मांगा । १७ पर उस ने उन के मन की बातें जानकर उन से कहा जिस जिस राज्य में फूट होती है वह राज्य उजड़ जाता है और जिस घर में फूट होती है वह नाश हो जाता है । १८ और यदि शैतान अपना ही विरोधी हो जाए तो उस का राज्य क्योंकर बना रहेगा । क्योंकि तुम मेरे विषय में तो कहते हो कि यह शैतान की सहायता से दुष्टात्मा निकालता है । १६ भला यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं । इस लिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे । २० पर यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा । २१ जब बलवन्त मनुष्य हथियार बांधे हुए अपने घर की रखवाली करता है तो उस की संपत्ति बची रहती है । २२ पर जब उस से बढ़कर कोई और बलवन्त चढ़ाई करके उसे जीत लेता है तो उस के वे हथियार जिन पर उस का भरोसा था छीन लेता और उस की संपत्ति लूट कर बांटता है । २३ जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में हैं और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिथराता है । २४ जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाता है तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढ़ता फिरता है और जब नहीं पाता तो कहता है कि मैं अपने उसी घर में जहां

से निकला था लौट जाऊंगा। २५ और आकर उसे झाड़ा बुहारा और सजा सजाया पाता है। २६ तब वह जाकर अपने से और बुरे सात आत्माओं को अपने साथ ले आता है और वे उस में पैठकर बास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है॥

२७ जब वह ये बातें कह ही रहा था तो भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊंचे शब्द से कहा धन्य वह गर्भ जिस में तू रहा और वे स्तन जो तूने चूसे। २८ उस ने कहा हां पर धन्य वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं॥

२९ जब बड़ी भीड़ इकट्ठी होती जाती थी तो वह कहने लगा कि इस समय के लोग बुरे हैं वे चिन्ह ढूंढ़ते हैं पर यूनुस के चिन्ह को छोड़ कोई चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा। ३० जैसा यूनुस नीनवे के लोगों के लिये चिन्ह ठहरा वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी इस समय के लोगों के लिये ठहरेगा। ३१ दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस समय के मनुष्यों के साथ उठ कर उन्हें दोषी ठहराएगी क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी की छोर से आई और देखो यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है। ३२ नीनवे के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगों के साथ खड़े होकर उन्हें दोषी ठहराएंगे क्योंकि उन्हों ने यूनुस का प्रचार सुन कर मन फिराया और देखो यहां वह है जो यूनुस से भी बड़ा है॥

३३ कोई मनुष्य दिया बार के तलघरे में या पैमाने के नीचे नहीं रखता पर दीवट पर कि भीतर आने वाले उजाला पाएं। ३४ तेरे शरीर का दिया तेरी आंख है इस लिये जब तेरी आंख निर्मल है तो तेरा सारा शरीर भी उजाला है पर जब वह बुरी है तो तेरा शरीर भी अंधेरा है। ३५ सो चौकस रहना कि जो उजाला तुझ में है वह अंधेरा न हो जाय। ३६ इस लिये यदि तेरा सारा शरीर उजाला हो और उस का कोई भाग अंधेरा न रहे तो सब का सब ऐसा उजाला होगा जैसा उस समय होता है जब दिया अपनी चमक से तुझे उजाला देता है॥

३७ जब वह बातें कर रहा था तो किसी फरीसी ने उस से बिनती की कि मेरे यहां भोजन कर और वह भीतर जाकर भोजन करने बैठा। ३८ फरीसी ने यह देखकर अचम्भा किया कि वह भोजन करने से पहिले नहीं नहाया। ३९ प्रभु ने उस से कहा हे फरीसियो तुम कटोरे और थाली को ऊपर ऊपर तो मांजते हो पर तुम्हारे भीतर अंधेर और दुष्टता भरी है। ४० हे निर्बुद्धियो जिस ने बाहर का भाग बनाया क्यों उस ने भीतर का भाग नहीं बनाया। ४१ पर हां भीतरवाली वस्तुओं को दान कर दो तो देखो सब कुछ तुम्हारे लिये शुद्ध हो जाएगा॥

४२ पर हे फरीसियो तुम पर हाय तुम पोदीने और सुदाब का और सब भांति के साग पात का दसवां अंश देते

हो पर न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते हो। चाहिये था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते। ४३ हे फरीसियो तुम पर हाय तुम सभाओं में मुख्य मुख्य आसन और बाजारों में नमस्कार चाहते हो। ४४ हाय तुम पर क्योंकि तुम उन छिपी कबरों के समान हो जिन पर लोग चलते हैं पर नहीं जानते ॥

४५ तब एक व्यवस्थापक ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु इन बातों के कहने से तू हमारी निन्दा करता है। ४६ उस ने कहा हे व्यवस्थापको तुम पर भी हाय तुम ऐसे बोझ जिन को उठाना कठिन है मनुष्यों पर लादते हो पर तुम आप उन बोझों को अपनी एक उंगली से भी नहीं छूते। ४७ हाय तुम पर तुम उन नबियों की कबरें बनाते हो जिन्हें तुम्हारे ही बाप दादों ने मार डाला था। ४८ सो तुम गवाह हो और अपने बाप दादों के कामों में सम्मत हो क्योंकि उन्हों ने तो उन्हें मार डाला और तुम उन की कबरें बनाते हो। ४९ इस लिये परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा है कि मैं उन के पास नबियों और प्रेरितों को भेजूंगा और वे उन में से कितनों को मार डालेंगे और कितनों को सताएंगे। ५० कि जितने नबियों का .खून जगत की उत्पत्ति से बहाया गया है सब का लेखा इस समय के लोगों से लिया जाय, ५१ हाबील के .खून से लेकर जकरयाह के .खून तक जो बेदी और मन्दिर के बीच में घात किया गया। मैं तुम

से सच कहता हूं उस का लेखा इसी समय के लोगों से लिया जाएगा। ५२ हाय तुम व्यवस्थापकों पर कि तुम ने ज्ञान की कुंजी ले तो ली पर तुम ने आपही प्रवेश नहीं किया और प्रवेश करनेवालों को भी रोका॥

५३ जब वह वहां से निकला तो शास्त्री और फरीसी बहुत पीछे पड़के छेड़ने लगे कि वह बहुत सी बातों की चरचा करे। ५४ और उस की घात में लगे रहे कि उस के मुंह की कोई बात पकड़ें॥

१२. इतने में जब हज़ारों की भीड़ लग गई यहां तक कि एक दूसरे पर गिरा पड़ता था तो वह सब से पहिले अपने चेलों से कहने लगा कि फरीसियों के कपटरूपी ख़मीर से चौकस रहना। २ कुछ ढपा नहीं जो खोला न जाएगा और न कुछ छिपा है जो जाना न जाएगा। ३ इस लिये जो कुछ तुम ने अंधेरे में कहा है वह उजाले में सुना जाएगा और जो तुम ने कोठरियों में कानों कान कहा है वह कोठों पर प्रचार किया जायगा। ४ पर मैं तुम से जो मेरे मित्र हो कहता हूं कि जो शरीर को घात करते हैं पर उस के पीछे और कुछ नहीं कर सकते उन से न डरो। मैं तुम्हें चिताता हूं तुम्हें किस से डरना चाहिए। ५ घात करने के पीछे जिस को नरक में डालने का अधिकार है उसी से डरो बरन मैं तुम से कहता हूँ उसी से डरो। ६ क्या दो पैसे की पांच गौरैया नहीं बिकतीं तौभी परमेश्वर उन

में से एक को भी नहीं भूलता। ७ बरन तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं सो डरो नहीं तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो। ८ मैं तुम से कहता हूं जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान ले उसे मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने मान लेगा। ९ पर जो मनुष्यों के सामने मुझे नकारे वह परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने नकारा जाएगा। १० जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहे उस का वह अपराध क्षमा किया जाएगा पर जो पवित्र आत्मा की निन्दा करे उस का अपराध क्षमा न किया जाएगा। ११ जब लोग तुम्हें सभाओं और हाकिमों और अधिकारियों के सामने ले जाएं तो चिन्ता न करना कि किस रीति से या क्या उत्तर दें या क्या कहें। १२ क्योंकि पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखा देगा कि क्या कहना चाहिए॥

१३ फिर भीड़ में से किसी ने उस से कहा हे गुरु मेरे भाई से कह कि पिता की संपत्ति मुझे बांट दे। १४ उस ने उस से कहा हे मनुष्य किस ने मुझे तुम्हारा न्यायी या बांटनेवाला ठहराया। १५ और उस ने उन से कहा चौकस रहो और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखना क्योंकि किसी का जीवन उस की संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता। १६ उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। १७ तब वह

अपने मन में विचार करने लगा क्या करूं क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं जहां अपना अन्नादि रक्खूं । १८ और उस ने कहा मैं यह करूंगा मैं अपनी बखारियां तोड़ कर उन से बड़ी बनाऊंगा । १९ और वहां अपना सब अन्न और अपनी संपत्ति रक्खूंगा । और अपने प्राण से कहूंगा हे प्राण तेरे पास बहुत बरसों के लिये बहुत संपत्ति रक्खी है चैन कर खा पी सुख से रह । २० परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है वह किस का होगा । २१ ऐसा ही वह भी है जो अपने लिये धन बटोरता परन्तु परमेश्वर के लेखे धनी नहीं ॥

२२ फिर उस ने अपने चेलों से कहा इस लिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण की चिन्ता न करो कि हम क्या खाएंगे न शरीर की कि क्या पहिनेंगे । २३ क्योंकि भोजन से प्राण और वस्त्र से शरीर बढ़कर है । २४ कौवों को देख लो । वे न बोते हैं न लवते उन के न भण्डार और न खत्ता है तौभी परमेश्वर उन्हें पालता है । तुम पक्षियों से कितने बढ़कर हो । २५ तुम में से कौन है जो चिन्ता करने से अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है । २६ सो यदि तुम छोटे से छोटा काम भी नहीं कर सकते तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो । सोसनों पर ध्यान करो वे कैसे बढ़ते हैं । २७ वे न मिहनत करते न कातते हैं पर मैं तुम से कहता हूं कि

सुलैमान भी अपने सारे विभव में उन में से एक के बराबर पहिने हुए न था। २८ यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी ऐसा पहिनाता है तो हे अल्प विश्वासियो वह तुम्हें क्यों न पहिनाएगा। २९ तुम इस बात की खोज में न रहो कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे और न सन्देह करो। ३० जगत की जातियां इन सब बस्तुओं की खोज में रहती और तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें ये बस्तुएं चाहिएं। ३१ पर उस के राज्य की खोज में रहो तो ये वस्तुएं भी तुम्हें दी जाएंगी। ३२ हे छोटे झुण्ड मत डर क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है कि तुम्हें राज्य दे। ३३ अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ जो पुराने नहीं होते और स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं जिस के निकट चोर नहीं जाता और कीड़ा नहीं बिगाड़ता। ३४ क्योंकि जहां तुम्हारा धन है वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

३५ तुम्हारी कमरें बंधी रहें और दिये जलते रहें। ३६ और तुम उन मनुष्यों के समान बनो जो अपने स्वामी की बाट देख रहे हैं कि वह ब्याह से कब लौटेगा कि जब वह आकर द्वार खटखटाए तो तुरन्त उस के लिये खोल दें; ३७ धन्य हैं वे दास जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए मैं तुम से सच कहता हूं वह कमर बांध कर उन्हें भोजन करने को

बैठाएगा और पास आकर उन की सेवा टहल करेगा । ३८ यदि वह दूसरे पहर या तीसरे पहर आकर उन्हें जागते पाए तो वे दास धन्य हैं । ३९ तुम यह जान रक्खो कि यदि घर का स्वामी जानता कि चोर किस घड़ी आएगा तो जागता रहता और अपने घर में सेंध लगने न देता । ४० तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी तुम सोचते भी नहीं उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आएगा ॥

४१ तब पतरस ने कहा हे प्रभु क्या यह दृष्टान्त तू हम से या सब से कहता है । ४२ प्रभु ने कहा वह बिश्वास योग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है जिस का स्वामी उसे नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर सीधा दे । ४३ धन्य है वह दास जिसे उस का स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए । ४४ मैं तुम से सच कहता हूं वह उसे अपनी सब संपत्ति पर सरदार ठहराएगा । ४५ पर यदि वह दास सोचने लगे कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है और दासों और दासियों को मारने पीटने और खाने पीने और पियक्कड़ होने लगे, ४६ तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन कि वह उस की बाट जोहता न रहे और ऐसी घड़ी जिसे वह जानता न हो आएगा और उसे भारी ताड़ना देकर उस का भाग अबिश्वासियों के साथ ठहराएगा । ४७ सो वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था और तैयार न रहा न उस की इच्छा के अनुसार चला

बहुत मार खाएगा। ४८ पर जो न जानता था और मार खाने योग्य काम किए वह थोड़ी मार खाएगा। सो जिसे बहुत दिया गया है उस से बहुत मांगा जाएगा और जिसे बहुत सौंपा गया है उस से बहुत मांगेंगे॥

४९ मैं पृथिवी पर आग लगाने आया हूं और क्या चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती। ५० मुझे एक बपतिसमा लेना है और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी सकेती में हूं। ५१ क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं मैं तुम से कहता हूं नहीं बरन फूट। ५२ क्योंकि अब से एक घर में पांच जन आपस में फूट रक्खेंगे तीन दो से और दो तीन से। ५३ पिता पुत्र से और पुत्र पिता से फूट रक्खेगा मां बेटी से और बेटी मां से सास बहू से और बहू सास से फूट रक्खेगी॥

५४ और उस ने भीड़ से भी कहा जब बादल को पच्छिम से उठते देखते हो तो तुरन्त कहते हो कि वर्षा होगी और ऐसा ही होता है। ५५ और जब दक्खिना चलती देखते हो तो कहते हो कि लूह चलेगी और ऐसा ही होता है। ५६ हे कपटियो तुम धरती और आकाश के रूप में भेद कर सकते हो पर इस समय के विषय में क्यों नहीं जानते। ५७ और तुम आप ही बिचार क्यों नहीं कर लेते कि उचित क्या है। ५८ जब तू अपने मुद्दई

के साथ हाकिम के पास जा रहा है तो मार्ग ही में उस से छूटने का यतन कर ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायी के पास खींच ले जाए और न्यायी तुझे प्यादे को सौंपे और प्यादा तुझे बन्धन में डाल दे। ५६ मैं तुझ से कहता हूं कि जब तक तू दमड़ी दमड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा॥

१३ उस समय कितने लोग आ पहुँचे और उस से उन गलीलियों की चरचा करने लगे जिन का लोहू पीलातुस ने उन ही के बलिदानों के साथ मिलाया था। २ यह सुन उस ने उन को उत्तर दे कहा क्या तुम समझते हो कि ये गलीली और सब गलीलियों से पापी थे कि उन पर ऐसी विपत्ति पडी। ३ मै तुम से कहता हूं कि नहीं पर यदि तुम मन न फिराओ तो तुम सब इसी रीति से नाश होगे। ४ या क्या तुम समझते हो कि वे अठारह जन जिन पर शीलोह का गुम्मट गिरा और वे दब कर मर गए यरुशलेम के और सब रहनेवालों से बढ़कर अपराधी थे। ५ मैं तुम से कहता हूं कि नही पर यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब इसी रीति से नाश होगे॥

६ फिर उस ने यह दृष्टान्त भी कहा कि किसी की अंगूर की बारी में एक अंजीर का पेड लगा हुआ था वह उस में फल ढूँढने आया पर न पाया। ७ तब उस ने बारी के रखवाले से कहा देख तीन बरस से मैं इस अंजीर

के पेड़ से फल ढूंढ़ने आता हूं पर नहीं पाता इसे काट डाल यह भूमि को भी क्यों रोके। ८ उस ने उस को उत्तर दिया कि हे स्वामी इसे इस बरस तो और रहने दे कि मैं इस के चारों ओर खोदकर खाद डालूं। ९ सो आगे को फले तो भला नहीं तो पीछे उसे काट डालना॥

१० बिश्राम के दिन वह एक सभा के घर में उपदेश कर रहा था। ११ और देखो एक स्त्री थी जिसे अठारह बरस से एक दुर्बल करनेवाला दुष्टात्मा लगा था और वह कुबड़ी हो गई थी और किसी रीति से सीधी न हो सकती थी। १२ यीशु ने उसे देखकर बुलाया और कहा हे नारी तू अपनी दुर्बलता से छूट गई। १३ तब उस ने उस पर हाथ रक्खे और वह तुरन्त सीधी हो गई और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी। १४ इस लिये कि यीशु ने बिश्राम के दिन उसे अच्छा किया था इस कारण सभा का सरदार रिसियाकर लोगों से कहने लगा छः दिन हैं जिन में काम करना चाहिए सो उनही दिनों में आकर अच्छे होओ पर बिश्राम के दिन में नहीं। १५ यह सुन प्रभु ने उत्तर दे कहा हे कपटियो क्या बिश्राम के दिन तुम में से हर एक अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता। १६ और क्या उचित न था कि यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह बरस से बांध रक्खा था बिश्राम के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती। १७ जब

उस ने ये बातें कहीं तो उस के सब बिरोधी लजा गए और सारी भीड़ उन महिमा के कामों से जो वह करता था आनन्द हुई ॥

१८ फिर उस ने कहा परमेश्वर का राज्य किस के समान है और मैं उस की उपमा किस से दूं। १९ वह राई के एक दाने के समान है जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपनी बारी मे बोया और वह बढकर पेड़ हो गया और आकाश के पक्षियों ने उस की डालियों पर बसेरा किया। २० उस ने फिर कहा मैं परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दूं। २१ वह खमीर के समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया और होते होते सब खमीर हो गया ॥

२२ वह नगर नगर और गांव गांव होकर उपदेश करता हुआ यरूशलेम की ओर जा रहा था। २३ और किसी ने उस से पूछा हे प्रभु क्या उद्धार पानेवाले थोड़े हैं। २४ उस ने उन से कहा सकेत द्वार से प्रवेश करने का यतन करो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे और न कर सकेंगे। २५ जब घर का स्वामी उठ कर द्वार बन्द कर चुका हो और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो हे प्रभु हमारे लिये खोल दे और वह उत्तर दे मैं तुम्हें नहीं जानता तुम कहां के हो। २६ तब तुम कहने लगोगे कि हम ने तेरे सामने खाया

पीया और तू ने हमारे बाजारों में उपदेश किया। २७ पर वह कहेगा मैं तुम से कहता हूं मैं नहीं जानता तुम कहां से हो हे कुकर्म्म करनेवालो तुम सब मुझ से दूर हो। २८ वहां रोना और दांत पीसना होगा जब तुम इब्राहीम और इशहाक और याकूब और सब नबियों को परमेश्वर के राज्य में बैठे और अपने आप को बाहर निकाले हुए देखोगे। २९ और पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन से लोग आकर परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे। ३० और देखो कितने पिछले हैं जो पहिले होंगे और कितने पहिले हैं जो पिछले होंगे॥

३१ उसी घड़ी कितने फरीसियों ने आकर उस से कहा यहां से निकल कर चला जा क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है। ३२ उस ने उन से कहा जाकर उस लोमड़ी से कह दो कि देख मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालता और बीमारों को चंगा करता हूं और तीसरे दिन पूरा करूंगा। ३३ तौभी मुझे आज और कल और परसों चलना अवश्य है क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई नबी यरूशलेम के बाहर मारा जाए। ३४ हे यरूशलेम हे यरूशलेम तू जो नबियों को मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गए उन्हें पत्थरवाह करती है कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है वैसे ही मैं भी

तेरे बालकों को इकट्ठे करूं पर तुम ने न चाहा। ३५ देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुम से कहता हूं जब तक तुम न कहोगे कि धन्य वह जो प्रभु के नाम से आता है तब तक तुम मुझे कभी न देखोगे ॥

१४. फिर वह विश्राम के दिन फरीसियों के सरदारों में से किसी के घर में रोटी खाने गया और वे उस की ताक मे थे। २ और देखो एक मनुष्य उस के सामने था जिसे जलन्धर का रोग था। ३ इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीसियों से कहा क्या विश्राम के दिन अच्छा करना उचित है कि नहीं। ४ पर वे चुप रहे। तब उस ने उसे हाथ लगाकर चंगा किया और जाने दिया। ५ और उन से कहा कि तुम में से ऐसा कौन है जिस का गदहा या बैल कूए में गिरे और वह विश्राम के दिन उसे तुरन्त न निकाल ले। ६ वे इन बातों का उत्तर न दे सके ॥

७ जब उस ने देखा कि नेवतहरी लोग क्योंकर मुख्य मुख्य जगहें चुन लेते हैं तो एक दृष्टान्त देकर उन से कहा। ८ जब कोई तुझे ब्याह में बुलाए तो मुख्य जगह में न बैठ ऐसा न हो कि उस ने तुझ से भी किसी बड़े को नेवता दिया हो। ९ और जिस ने तुझे और उसे दोनों को नेवता दिया है आकर तुझ से कहे कि इस को जगह

दे और तब तुझे लज्जा खाकर सब से नीची जगह में बैठना पड़े। १० पर जब तू बुलाया जाए तो सब से नीची जगह जा बैठ कि जब वह जिस ने तुझे नेवता दिया है आए तो तुझ से कहे हे मित्र आगे बढ़कर बैठ तब तेरे साथ बैठनेवालों के सामने तेरी बड़ाई होगी। ११ क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा वह छोटा किया जाएगा और जो अपने आप को छोटा बनाएगा वह बड़ा किया जाएगा॥

१२ तब उस ने अपने नेवता देनेवाले से भी कहा जब तू दिन का या रात का भोज करे तो अपने मित्रों या भाइयों या कुटुम्बियों या धनवान पड़ोसियों को न बुला ऐसा न हो कि वे भी तुझे नेवता दें और तेरा बदला हो जाए। १३ पर जब तू भोज करे तो कंगालों टुण्डों लंगड़ों और अंधों को बुला। १४ तब तू धन्य होगा क्योंकि उन के पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं पर तुझे धर्म्मियों के जी उठने पर बदला मिलेगा॥

१५ उस के साथ भोजन करनेवालों में से एक ने ये बातें सुनकर उस से कहा धन्य वह जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा। १६ उस ने उस से कहा किसी मनुष्य ने बड़ी जेवनार की और बहुतों को बुलाया। १७ जब भोजन तैयार हो गया तो उस ने अपने दास के हाथ नेवतहरियों को कहला भेजा कि आओ अब भोजन तैयार

है। १८ पर वे सब के सब क्षमा मांगने लगे पहिले ने उस से कहा मैं ने खेत मोल लिया है और चाहिए कि उसे देखूं मैं तुझ से बिनती करता हूं मुझे क्षमा करा दे। १९ दूसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़ बैल मोल लिए हैं और उन्हें परखने जाता हूं मैं तुझ से बिनती करता हूं मुझे क्षमा करा दे। २० एक और ने कहा मैं ने ब्याह किया है इसलिये मैं नहीं आ सकता। २१ उस दास ने आकर अपने स्वामी को ये बातें सुनाईं तब घर के स्वामी ने क्रोध कर अपने दास से कहा नगर के बाजारों और गलियों में तुरन्त जाकर कंगालों टुण्डों लंगड़ों और अंधों को यहां ले आ। २२ दास ने फिर कहा हे स्वामी जैसे तू ने कहा था वैसे ही हुआ है और अब भी जगह है। २३ स्वामी ने दास से कहा सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस ले आ कि मेरा घर भर जाए। २४ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि उन नेवते हुओं में से कोई मेरी जेवनार न चखेगा॥

२५ और जब बड़ी भीड़ उस के साथ जा रही थी तो उस ने पीछे फिरकर उन से कहा। २६ यदि कोई मेरे पास आए और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केबालों और भाइयों और बहिनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। २७ और जो कोई अपना क्रूस न उठाए और मेरे पीछे

न आए वह मेरा चेला नहीं हो सकता । २८ तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े कि पूरा करने की बिसात मेरे पास है कि नहीं । २९ ऐसा न हो कि जब नेव डाल कर तैयार न कर सके तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें, ३० कि यह मनुष्य बनाने तो लगा पर तैयार न कर सका । ३१ या कौन ऐसा राजा है कि दूसरे राजा से लड़ने जाता हो और पहिले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है क्या मैं दस हजार लेकर उस का सामना कर सकता हूं कि नहीं । ३२ नहीं तो उस के दूर रहते ही वह दूतों को भेजकर मिलाप चाहेगा । ३३ इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न करे वह मेरा चेला नहीं हो सकता । ३४ नमक अच्छा है पर यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए तो वह किस से स्वादित किया जाएगा । वह न भूमि के न खाद के लिये काम आता है । ३५ लोग उसे बाहर फेंक देते हैं । जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले ॥

१५. सब महसूल लेनेवाले और पापी उस के पास आते थे कि उस की सुनें । २ और फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ाकर कहने लगे कि यह तो पापियों से मिलता और उन के साथ खाता है ॥

३ तब उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा । ४ तुम में

से कौन है जिस की सौ भेड़ हों और उन में से एक खो जाए तो निन्नानवे को जंगल में छोड़कर उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे। ५ और जब मिल जाती है तो वह आनन्द से उसे कांधे पर उठा लेता है। ६ और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है मेरे साथ आनन्द करो क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई। ७ मैं तुम से कहता हूं कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में स्वर्ग में इतना आनन्द होगा जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय न होता जिन्हें मन फिराने की ज़रूरत नहीं॥

८ या कौन ऐसी स्त्री होगी जिस के पास दस सिक्के हों और एक खो जाए तो वह दिया बार घर बुहार जब तक मिल न जाए जी लगाकर खोजती न रहे। ९ और जब मिल जाता है तो वह सखियों और पड़ोसिनियों को इकट्ठी करके कहती है मेरे साथ आनन्द करो कि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया। १० मैं तुम से कहता हूं कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है॥

११ फिर उस ने कहा किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। १२ उन में से छुटके ने पिता से कहा हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो वह मुझे दे। १३ उस ने उन को अपनी संपत्ति बांट दी। और बहुत दिन न बीते कि

छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके दूर देश को चला गया और वहां लुचपन में अपनी संपत्ति उड़ा दी। १४ जब वह सब कुछ उठा चुका तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया। १५ और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने को भेजा। १६ और वह चाहता था कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे और उसे कोई कुछ न देता था। १७ जब वह अपने आपे में आया तब वह कहने लगा मेरे पिता के कितने मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है और मैं यहां भूखों मरता हूं। १८ मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा हे पिता मैं ने स्वर्ग के बिरोध में और तेरे देखते पाप किया है। १९ अब इस लायक नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं मुझे अपने एक मजदूर की नाईं लगा ले। २० तब वह उठकर अपने पिता के पास चला पर वह अभी दूर ही था कि उस के पिता ने उसे देखकर तरस खाया और दौड़कर उसे गले लगाया और बहुत चूमा। २१ पुत्र ने उस से कहा हे पिता मैं ने स्वर्ग के बिरोध में और तेरे देखते पाप किया है और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं। २२ पर पिता ने अपने दासों से कहा झट अच्छे से अच्छा पहिनावा निकाल कर उसे पहिनाओ और उस के हाथ में अंगूठी और पांवों में

जूती पहिनाओ । २३ और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो और हम खाएं और आनन्द करें । २४ क्योंकि मेरा यह पुत्र मरा था फिर जी गया है खो गया था अब मिला है तब वे आनन्द करने लगे । २५ पर उस का जेठा पुत्र खेत में था और जब वह आते हुए घर के निकट पहुँचा तो गाने बजाने और नाचने का शब्द सुना । २६ और उस ने एक टहलुए को बुलाकर पूछा यह क्या हो रहा है । २७ उस ने उस से कहा तेरा भाई आया है और तेरे पिता ने पला हुआ बछड़ा कटवाया है इस लिये कि उसे भला चंगा पाया । २८ यह सुन वह क्रोध से भर गया और भीतर जाना न चाहा पर उस का पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा । २९ उस ने पिता को उत्तर दिया कि देख मैं इतने बरस से तेरी सेवा कर रहा हूं और कभी तेरी आज्ञा न टाली तौ भी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा न दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता । ३० पर जब तेरा यह पुत्र जिस ने तेरी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दीई आया तो उस के लिये तू ने पला हुआ बछड़ा कटवाया । ३१ उस ने उस से कहा पुत्र तू सदा मेरे साथ है और जो कुछ मेरा है सब तेरा ही है । ३२ पर आनन्द करना और मगन होना चाहिए था क्योंकि यह तेरा भाई मरा था फिर जी गया खो गया था अब मिला है ॥

१६. फिर उस ने चेलों से भी कहा किसी धनवान १. का एक भण्डारी था और लोगों ने उस के सामने उस पर यह दोष लगाया कि यह तेरी संपत्ति उड़ाए देता है। २ सो उस ने उसे बुलाकर कहा यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुनता हूं। अपने भण्डारीपन का लेखा दे क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता। ३ तब भण्डारी सोचने लगा मैं क्या करूं क्योंकि मेरा स्वामी भण्डारी का काम मुझ से छीने लेता है मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती और भीख मांगने से मुझे लाज आती है। ४ मैं समझ गया कि क्या करूंगा इस लिये कि जब मैं भण्डारी के काम से छुड़ाया जाऊं तो लोग मुझे अपने घरों में ले लें। ५ और उस ने अपने स्वामी के देनदारों में से एक एक को बुलाकर पहिले से पूछा कि तुझ पर मेरे स्वामी का क्या आता है। ६ उस ने कहा सौ मन तेल तब उस ने उस से कहा कि अपनी टीप ले और बैठकर तुरन्त पचास लिख दे। ७ फिर दूसरे से पूछा तुझ पर क्या आता है उस ने कहा सौ मन गेहूं तब उस ने उस से कहा अपनी टीप लेकर अस्सी लिख दे। ८ स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी को सराहा कि उस ने चतुराई से काम किया है क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ ज्योति के लोगों से रीति व्यवहारों में बहुत चतुर हैं। ९ और मैं तुम से कहता हूं कि अधर्म के धन से अपने

लिये मित्र बना लो कि जब वह जाता रहे तो ये तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें। १० जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है वह बहुत में भी सच्चा है और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है वह बहुत में भी अधर्मी है। ११ इस लिये जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे तो सच्चा तुम्हें कौन सौंपेगा। १२ और यदि तुम पराए धन में सच्चे न ठहरे तो जो तुम्हारा है उसे तुम्हें कौन देगा। १३ कोई टहलुआ दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रक्खेगा या एक से मिला रहेगा और दूसरे को हलका जानेगा तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते॥

१४ फरीसी जो लोभी थे ये सब बातें सुनकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे। १५ उस ने उन से कहा तुम तो मनुष्यों के सामने अपने आप को धर्मी ठहराते हो। परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मनको जानता है। जो मनुष्यों के लेखे महान है वह परमेश्वर के निकट घिनौना है। १६ व्यवस्था और नबी यूहन्ना तक रहे तब से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जाता है और हर कोई उस में बल से प्रवेश करता है। १७ आकाश और पृथिवी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है। १८ जो कोई अपनी पत्नी को त्याग कर दूसरी से ब्याह करता है वह व्यभिचार

करता है और जो कोई ऐसी त्यागी हुई स्त्री से ब्याह करता है वह भी व्यभिचार करता है ॥

१९ एक धनवान मनुष्य था जो बैजनी कपड़े और मलमल पहिनता और दिन दिन सुख बिलास और धूम धाम के साथ रहता था। २० और लाजर नाम एक कङ्गाल घावों से भरा हुआ उस की डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। २१ और चाहता था कि धनवान की मेज पर की जूठन से अपना पेट भरे बरन कुत्ते भी आकर उस के घावों को चाटते थे। २२ वह कङ्गाल मर गया और स्वर्ग दूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुँचाया और वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया। २३ और अधोलोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। २४ और उस ने पुकार कर कहा हे पिता इब्राहीम मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे कि अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठण्ढी करे क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। २५ पर इब्राहीम ने कहा हे पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीते जी अच्छी अच्छी वस्तुएं ले चुका है और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं पर अब वह यहां शान्ति पा रहा है और तू तड़प रहा है। २६ और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी खड्ड ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार जाना चाहें वे न जा सकें और न कोई वहां से इस पार हमारे

पास आ सके । २७ उस ने कहा तो हे पिता मैं तुझ से बिनती करता हूं कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज । २८ क्योंकि मेरे पांच भाई हैं वह उन के सामने इन बातों की गवाही दे ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं । २९ इब्राहीम ने उस से कहा उन के पास मूसा और नबियों की पुस्तकें हैं वे उन की सुनें । ३० उस ने कहा नहीं हे पिता इब्राहीम पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए तो वे मन फिराएंगे । ३१ उस ने उस से कहा कि जब वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो यदि मरे हुओं में से कोई जी उठे तौभी उस की न मानेंगे ॥

१७. फिर उस ने अपने चेलों से कहा हो नहीं सकता कि ठोकर न आएं पर हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा वे आती हैं । २ जो इन छोटों में से किसी एक को ठोकर खिलाता है उस के लिये यह भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाता और वह समुद्र में डाला जाता । ३ सचेत रहो यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे समझा और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर । ४ यदि दिन भर में वह सात बार तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे पास फिर आकर कहे कि मैं पछताता हूं तो उसे क्षमा कर ॥

५ तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा हमारा बिश्वास बढ़ा । ६ प्रभु ने कहा कि यदि तुम को राई के दाने के बराबर भी

बिश्वास होता तो तुम इस तूत के पेड़ से कहते कि जड़ से उखड़ कर समुद्र में लग जा तो वह तुम्हारी मान लेता। ७ पर तुम में से ऐसा कौन है जिस का दास हल जोतता या भेड़ें चराता हो और जब वह खेत से आए तो उस से कहे तुरन्त आकर भोजन करने बैठ। ८ और यह न कहे कि मेरी बियारी बना और जब तक मैं खाऊं पीऊं तब तक कमर बांधकर मेरी टहल कर इस के पीछे तू खा पी लेना। ९ क्या वह उस दास का निहोरा मानेगा कि उस ने वे ही काम किए जिस की आज्ञा दी गई थी। १० इसी रीति से तुम भी जब उन सब कामों को कर चुके जिस की आज्ञा तुम्हें दी गई थी तो कहो हम निकम्मे दास हैं कि जो हमें करना चाहिये था वही किया है॥

११ वह यरूशलेम को जाते हुए सामरिया और गलील के बीच से होकर जा रहा था। १२ किसी गांव में पैठते समय उसे दस कोढ़ी मिले और उन्हों ने दूर खड़े होकर, १३ ऊंचे शब्द से कहा हे यीशु हे स्वामी हम पर दया कर। १४ उस ने उन्हें देखकर कहा जाओ और अपने तईं याजकों को दिखाओ और जाते जाते वे शुद्ध हो गए। १५ तब उन में से एक यह देख कर कि मैं चङ्गा हो गया हूं ऊंचे शब्द से परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौटा। १६ और यीशु के पांवों पर मुंह के बल गिर कर उस का धन्यवाद करने लगा और यह सामरी था। १७ इस पर यीशु ने कहा क्या

दसों शुद्ध न हुए तो फिर वे नौ कहां हैं। १८ क्या इस परदेशी को छोड़ कोई और न निकला जो परमेश्वर की बड़ाई करता। १९ तब उस ने उस से कहा उठकर चला जा तेरे बिश्वास ने तुझे चङ्गा किया है॥

२० जब फरीसियों ने उस से पूछा कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा तो उस ने उन को उत्तर दिया कि परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता। २१ और लोग यह न कहेंगे कि देखो यहां या वहां है क्योंकि देखो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य में है॥

२२ और उस ने चेलों से कहा वे दिन आएंगे जिन में तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन देखना चाहोगे और न देखने पाओगे। २३ लोग तुम से कहेंगे देखो वहां है या देखो यहां है पर तुम चले न जाना और न उन के पीछे हो लेना। २४ क्योंकि जैसे बिजली आकाश की एक ओर से कौन्धकर आकाश की दूसरी ओर चमकती है वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में प्रगट होगा। २५ पर पहिले अवश्य है कि वह बहुत दुख उठाए और इस समय के लोग उसे तुच्छ ठहराएं। २६ जैसा नूह के दिनों में हुआ था वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। २७ जिस दिन तक नूह जहाज पर न चढ़ा उस दिन तक लोग खाते पीते थे और उन में ब्याह शादी होती थी तब जल प्रलय ने आकर उन सब को नाश किया। २८ और जैसा लूत के

दिनों में हुआ था कि लोग खाते पीते लेन देन करते पेड़ लगाते और घर बनाते थे। २९ पर जिस दिन लूत सदोम से निकला उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसो और सब को नाश किया, ३० मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने का दिन भी ऐसा ही होगा। ३१ उस दिन जो कोठे पर हो और उस का सामान घर में हो वह उसे लेने को न उतरे और वैसे ही जो खेत में हो वह पीछे न लौटे। ३२ लूत की पत्नी को स्मरण रक्खो। ३३ जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा और जो कोई उसे खोए वह उसे जीता रक्खेगा। ३४ मैं तुम से कहता हूं उस रात दो मनुष्य एक खाट पर होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। ३५ दो स्त्रियां एक साथ चक्की पीसती होंगी एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी। ३७ यह सुन उन्हों ने उस से पूछा हे प्रभु यह कहां होगा उस ने उन से कहा जहां लोथ होगी वहां गिद्ध इकट्ठे होंगे॥

१८. फिर उस ने इस के विषय कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए उन से यह दृष्टान्त कहा, २ कि किसी नगर में एक न्यायी था जो न परमेश्वर से डरता और न किसी मनुष्य की चिन्ता करता था। ३ और उसी नगर में एक बिधवा भी थी जो उस के पास आ आकर कहा करती थी कि मेरा न्याय

चुकाकर मुझे मुद्दई से बचा। ४ उस ने कितनी देर तक तो न माना पर पीछे अपने जी में कहा यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता और न मनुष्य की चिन्ता करता हूं। ५ तौभी यह विधवा मुझे सतातो रहती है इस लिये मैं उस का न्याय चुकाऊंगा ऐसा न हो कि घड़ी घड़ी आकर अन्त को मेरे नाक में दम करे। ६ प्रभु ने कहा सुनो कि यह अधर्मी न्यायी क्या कहता है। ७ सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा जो रात दिन उस की दुहाई देते रहते और क्या वह उन के विषय में देर करेगा। ८ मैं तुम से कहता हूं वह तुरन्त उन का न्याय चुकाएगा तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा तो क्या वह पृथिवी पर बिश्वास पाएगा॥

९ और उस ने कितनों से जो अपने पर भरोसा रखते थे कि हम धर्मी हैं और औरों को तुच्छ जानते थे यह दृष्टान्त कहा, १० कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने गए एक फरीसी और दूसरा महसूल लेनेवाला। ११ फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा कि हे परमेश्वर मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं और मनुष्यों की नाईं अंधेर करनेवाला अन्यायी और व्यभिचारी नहीं और न इस महसूल लेनेवाले के समान हूं। १२ मैं अठवारे में दो बार उपवास करता हूं मैं अपनी सारी कमाई का दसवां अंश देता हूं। १३ पर महसूल लेनेवाले ने दूर खड़े

होकर स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा बरन अपनी छाती पीट पीटकर कहा हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर। १४ मैं तुम से कहता हूं कि वह दूसरा नहीं पर यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा वह छोटा किया जाएगा और जो अपने आप को छोटा बनाएगा वह बड़ा किया जाएगा॥

१५ फिर लोग अपने बच्चों को भी उस के पास लाने लगे कि वह उन पर हाथ रक्खे और चेलों ने देखकर उन्हें डांटा। १६ यीशु ने बच्चों को पास बुलाकर कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। १७ मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा॥

१८ किसी सरदार ने उस से पूछा हे उत्तम गुरु अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये क्या करूं। १९ यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है। कोई उत्तम नहीं केवल एक अर्थात् परमेश्वर। २० तू आज्ञाओं को तो जानता है कि व्यभिचार न करना खून न करना और चोरी न करना झूठी गवाही न देना अपने पिता और अपनी माता का आदर करना। २१ उस ने कहा मैं तो इन सब को लड़कपन से मानता आया हूँ। २२ यह सुन यीशु ने उस से कहा तुझ में अब भी एक बात की घटी है अपना

सब कुछ बेच कर कंगालों को बांट दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा और आकर मेरे पीछे हो ले। २३ वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ क्योंकि वह बड़ा धनी था। २४ यीशु ने उसे देखकर कहा धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है। २५ परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है। २६ और सुननेवालों ने कहा तो किस का उद्धार हो सकता है। २७ उस से कहा जो मनुष्य से नहीं हो सकता वह परमेश्वर से हो सकता है। २८ पतरस ने कहा देख हम तो घर बार छोड़ कर तेरे पीछे हो लिये हैं। २९ उस ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि ऐसा कोई नहीं जिस ने परमेश्वर के राज्य के लिए घर या पत्नी या भाइयों या माता पिता या लड़के बालों को छोड़ दिया हो, ३० और इस समय कई गुना अधिक न पाए और परलोक में अनन्त जीवन॥

३१ उस ने बारहों को साथ लेकर उन से कहा देखो हम यरूशलेम को जाते हैं और जितनी बातें मनुष्य के पुत्र के लिये नबियों के द्वारा लिखी गई वे सब पूरी होंगी। ३२ क्योंकि वह अन्य जातियों के हाथ सौंपा जाएगा और वे उसे ठट्ठों में उड़ाएंगे और उस का अपमान करेंगे और उस पर थूकेंगे। ३३ और उसे कोड़े मारेंगे और घात करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा। ३४ और उन्हों ने इन बातों में

से कोई बात न समझी और यह बात उन से छिपी रही और जो कहा जाता था वह उन की समझ में न आया ॥

३५ जब वह यरीहो के निकट पहुँचा तो एक अंधा सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख मांग रहा था। ३६ और वह भीड़ के चलने की आहट सुनकर पूछने लगा यह क्या हो रहा है। ३७ उन्हों ने उस को बताया कि यीशु नासरी जा रहा है। ३८ तब उस ने पुकारके कहा हे यीशु दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कर। ३९ जो आगे जाते थे वे उसे डांटने लगे कि चुप रहे पर वह और भी पुकारने लगा कि हे दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कर। ४० तब यीशु ने खड़े होकर कहा उसे मेरे पास लाओ और जब वह निकट आया तो उस ने उस से यह पूछा, कि तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं। ४१ उस ने कहा हे प्रभु यह कि मैं देखने लगूं। ४२ यीशु ने उस से कहा देखने लग तेरे बिश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है। ४३ और वह तुरन्त देखने लगा और परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ उस के पीछे हो लिया और सब लोगों ने देखकर परमेश्वर की स्तुति की ॥

१९. वह यरीहो में आकर उस में जा रहा था। २ और देखो जक्कई नाम एक मनुष्य था जो महसूल लेनेवालों का सरदार और धनी था। ३ वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है पर भीड़ के

कारण देख न सकता था क्योंकि नाटा था । ४ तब उस को देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया क्योंकि वह उसी मार्ग से जाने को था । ५ जब यीशु उस जगह पहुँचा तो ऊपर दृष्टि कर उस से कहा हे जक्कई झट उतर आ क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है । ६ वह झट उतर कर आनन्द से उसे अपने घर ले गया । ७ यह देखकर सब कुड़कुड़ाकर कहने लगे वह तो एक पापी मनुष्य के यहां उतरा है । ८ जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा हे प्रभु देख मैं अपनी आधी संपति कंगालों को देता हूं और यदि किसी से अन्याय कर के कुछ ले लिया तो चौगुना फेर देता हूँ । ९ तब यीशु ने उस से कहा आज इस घर में उद्धार आया है इस लिये कि यह भी इब्राहीम का सन्तान है । १० क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उन का उद्धार करने आया है ॥

११ जब वे ये बातें सुन रहे थे तो उस ने एक दृष्टान्त कहा इस लिये कि वह यरूशलेम के निकट था और वे समझते थे कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट हुआ चाहता है । १२ सो उस ने कहा एक कुलीन मनुष्य दूर देश जाता था कि राजपद पाकर फिर आए। १३ और उसने अपने दासों में से दस को बुलाकर उन्हें दस मुहरें दीं और उन से कहा मेरे लौट आने तक लेन देन करना । १४ पर उस के नगर के रहनेवाले उस से बैर रखते थे और उस के पीछे दूतों के

द्वारा कहला भेजा कि हम नहीं चाहते कि यह हम पर राज्य करे। १४ जब वह राजपद पाकर लौट आया तो उस ने अपने दासों को जिन्हें रोकड़ दी थी अपने पास बुलवाया कि वह जाने कि उन्हों ने लेन देन करने से क्या क्या कमाया। १६ तब पहिले ने आकर कहा हे स्वामी तेरी मोहर ने दस और मोहरें कमाईं। १७ उस ने उस से कहा धन्य हे उत्तम दास तुझे धन्य है तू बहुत ही थोड़े में बिश्वासी निकला अब दस नगरों पर अधिकार रख। १८ दूसरे ने आकर कहा हे स्वामी तेरी मोहर ने पांच और मोहरें कमाईं। १९ उस ने उस से भी कहा तू भी पांच नगरों पर हाकिम हो जा। २० तीसरे ने आकर कहा हे स्वामी देख तेरी मोहर यह है जिसे मैं ने अंगोछे में बांध रक्खी। २१ क्योंकि मैं तुझ से डरता था इस लिये कि तू कठोर मनुष्य है जो तू ने नहीं धरा उसे उठा लेता है और जो तू ने नहीं बोया उसे काटता है। २२ उस ने उस से कहा हे दुष्ट दास मैं तेरे ही मुंह से तुझे दोषी ठहराता हूं। तू मुझे जानता था कि कठोर मनुष्य हूं जो मैं ने नहीं धरा उसे उठा लेता और जो मैं ने नहीं बोया उसे काटता हूं। २३ तो तू ने मेरे रुपये कोठी में क्यों नहीं रख दिए कि मैं आकर ब्याज समेत ले लेता। २४ और जो लोग निकट खड़े थे उस ने उन से कहा वह मोहर उस से ले लो और जिस के पास दस मोहरें हैं उसे दे दो। २५ उन्हों ने उस से कहा हे स्वामी उस के

पास दस मोहरें तो हैं । २६ मैं तुम से कहता हूं कि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और जिस के पास नहीं उस से वह भी जो उस के पास है ले लिया जाएगा । २७ पर मेरे उन बैरियों को जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य करूं यहां लाकर मेरे सामने घात करो ॥

२८ ये बातें कहकर वह यरूशलेम की ओर उन के आगे आगे चला ॥

२९ और जब वह जैतून नाम पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह के पास पहुँचा तो उस ने अपने चेलों में से दो को यह कहके भेजा, ३० कि सामने के गांव में जाओ और उस में पहुँचते ही एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई चढ़ा नहीं बंधा हुआ तुम्हें मिलेगा उसे खोल कर लाओ । ३१ और यदि कोई तुम से पूछे क्यों खोलते हो तो यों कह देना कि प्रभु को इस का प्रयोजन है । ३२ जो भेजे गये थे उन्हों ने जाकर जैसा उस ने उन से कहा था वैसा ही पाया। ३३ जब वे गदही के बच्चे को खोल रहे थे तो उस के मालिकों ने उन से पूछा इस बच्चे को क्यों खोलते हो । ३४ उन्हों ने कहा प्रभु को इस का प्रयोजन है । ३५ सो वे उस को यीशु के पास ले आए और अपने कपड़े उस बच्चे पर डालकर यीशु को बैठाया । ३६ जब वह जा रहा था तो वे अपने कपड़े मार्ग में बिछाते जाते थे । ३७ और निकट आते हुए जब वह जैतून पहाड़ के उतार पर

पहुँचा तो चेलों की सारी मण्डली उन सब सामर्थ के कामों के लिये जो उन्हों ने देखे थे आनन्दित होकर बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी, ३८ कि धन्य है वह राजा जो प्रभु के नाम से आता है स्वर्ग में शान्ति और आकाश में महिमा हो। ३९ तब भीड़ में से कितने फरीसी उस से कहने लगे हे गुरु अपने चेलों को डांट। ४० उस ने उत्तर दिया कि मैं तुम से कहता हूं यदि ये चुप रहें तो पत्थर चिल्ला उठेंगे॥

४१ जब वह निकट आया तो नगर को देखकर उस पर रोया। ४२ और कहा क्या ही भला होता कि तू हां तू ही इस दिन कुशल की बातें जानता पर अब वे तेरी आंखों से छिपी हैं। ४३ वे दिन तो तुझ पर आएंगे कि तेरे बैरी मोर्चा बांधकर तुझे घेर लेंगे और चारों ओर से तुझे दबा-एंगे। ४४ और तुझे और तेरे बालकों को जो तुझ में हैं मिट्टी में मिलाएंगे और तुझ में पत्थर पर पत्थर न छोड़ेंगे क्योंकि तू ने वह अवसर जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई न पहचाना॥

४५ तब वह मन्दिर में जाकर बेचनेवालों को बाहर निकालने लगा। ४६ और उन से कहा लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर होगा पर तुम ने उसे डाकुओं की खोह बना दिया है॥

४७ वह मन्दिर में हर दिन उपदेश करता था और महायाजक और शास्त्री और लोगों के रईस उसे नाश करने का अवसर ढूँढ़ते थे। ४८ पर कुछ करने न पाए क्योंकि सब लोग उस की सुनने में लौलीन थे ॥

२० एक दिन जब वह मन्दिर में लोगों को उपदेश देता और सुसमाचार सुना रहा था तो महायाजक और शास्त्री पुरनियों के साथ पास आकर खड़े हुए। २ और कहने लगे हमें बता तू ये काम किस अधिकार से करता है और वह कौन है जिस ने तुझे यह अधिकार दिया है। ३ उस ने उन को उत्तर दिया मैं भी तुम से यह बात पूछता हूं मुझे बताओ। ४ यूहन्ना का बपतिसमा क्या स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था। ५ तब वे आपस में कहने लगे यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों न की। ६ और यदि हम कहें मनुष्यों की ओर से तो सब लोग हमें पत्थरवाह करेंगे क्योंकि वे सचमुच जानते हैं कि यूहन्ना नबी था। ७ सो उन्हों ने उत्तर दिया हम नहीं जानते कि वह कहां से था। ८ यीशु ने उन से कहा तो मैं भी तुम को नहीं बताता कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूं ॥

९ तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और किसानों को उस का

ठेका दे बहुत दिन तक परदेश में जा रहा । १० समय पर उस ने किसानों के पास एक दास को भेजा कि वे दाख की बारी के कुछ फलों का भाग उसे दें पर किसानों ने उसे पीट कर छूछे हाथ लौटा दिया । ११ फिर उस ने एक और दास को भेजा और उन्हों ने उसे भी पीटकर और उस का अपमान करके छूछे हाथ लौटा दिया । १२ फिर उस ने तीसरा भेजा और उन्हों ने उसे भी घायल करके निकाल दिया । १३ तब दाख की बारी के स्वामी ने कहा मैं क्या करूं मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूंगा क्या जाने वे उस का आदर करें । १४ जब किसानों ने उसे देखा तो आपस में बिचार करने लगे कि यह तो वारिस है आओ हम उसे मार डालें कि मीरास हमारी हो जाए । १५ और उन्हों ने उसे दाख की बारी से बाहर निकाल कर मार डाला । इस लिये दाख की बारी का स्वामी उन से क्या करेगा । १६ वह आकर उन किसानों को नाश करेगा और दाख की बारी औरों को सौंपेगा । यह सुनकर उन्हों ने कहा ऐसा न हो । १७ उस ने उन की ओर देखकर कहा क्या लिखा है कि जिस पत्थर को राजों ने निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा हो गया । १८ जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा वह चूर हो जाएगा और जिस पर वह गिरेगा उस को पीस डालेगा ॥

१९ उसी घड़ी शास्त्रियों और महायाजकों ने उसे पकड़ना

चाहा क्योंकि समझ गए कि उस ने हम पर यह दृष्टान्त कहा पर वे लोगों से डरे। २० और वे उस की ताक में लगे और भेदिए भेजे जो धर्म का भेष धर कर उस की कोई न कोई बात पकड़ें कि उसे हाकिम के हाथ और अधिकार में सौंप दें। २१ उन्हों ने उस से यह पूछा कि हे गुरु हम जानते हैं कि तू ठीक कहता और सिखाता है और किसी का पक्षपात नहीं करता बरन परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है। २२ क्या हमें कैसर को कर देना उचित है कि नहीं। २३ उस ने उन की चतुराई ताड़ के उन से कहा, एक दीनार मुझे दिखाओ। इस पर किस की मूर्ति और नाम है। २४ उन्हों ने कहा कैसर का। २५ उस ने उन से कहा तो जो कैसर का है वह कैसर को और जो परमेश्वर का है परमेश्वर को दो। २६ वे लोगों के सामने उस बात को पकड़ न सके बरन उस के उत्तर से अचम्भित होकर चुप रहे॥

२७ फिर सदूकी जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं उन में से कितनों ने उस के पास आकर पूछा, २८ कि हे गुरु मूसा ने हमारे लिये यह लिखा है कि यदि किसी का भाई अपनी पत्नी के रहते हुए बिना सन्तान मर जाए तो उस का भाई उस की पत्नी को ब्याह ले और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे। २९ सो सात भाई थे पहिला भाई ब्याह करके बिना सन्तान मर गया। ३० फिर

दूसरे और तीसरे ने भी उस स्त्री को ब्याह लिया। ३१ इसी रीति से सातों बिना सन्तान मर गये। ३२ सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई। ३३ सो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी क्योंकि वह सातों की पत्नी हुई थी। ३४ यीशु ने उन से कहा कि इस युग के सन्तानों में तो ब्याह शादी होती है। ३५ पर जो लोग इस योग्य ठहरेंगे कि उस युग को और मरे हुओं का जी उठना प्राप्त करें उन में ब्याह शादी न होगी। ३६ वे फिर मरने के भी नहीं क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे और जी उठने के सन्तान होने से परमेश्वर के भी सन्तान होंगे। ३७ और यह बात कि मरे हुए जी उठते हैं मूसा ने भी झाड़ी की कथा में प्रगट की है कि वह प्रभु को इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर कहता है। ३८ परमेश्वर तो मरे हुओं का नहीं बरन जीवतों का परमेश्वर है क्योंकि उस के निकट सब जीते हैं। ३९ यह सुन शास्त्रियों में से कितनों ने कहा कि हे गुरु तू ने अच्छा कहा। ४० और उन्हें फिर उस से कुछ पूछने का हियाव न हुआ॥

४१ फिर उस ने उन से पूछा मसीह को दाऊद का सन्तान क्योंकर कहते हैं। ४२ दाऊद आप भजनसंहिता की पुस्तक में कहता है कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा मेरे दहिने बैठ, ४३ जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों

की पीढ़ी न कर दूं । ४४ दाऊद तो उसे प्रभु कहता है फिर वह उस का सन्तान क्योंकर ठहरा ॥

४५ जब सब लोग सुन रहे थे तो उस ने अपने चेलों से कहा । ४६ शास्त्रियों से चौकस रहा जिन को लम्बे लम्बे बस्त्र पहिने हुए फिरना भाता है और जिन्हें बाजारों में नमस्कार और सभाओं में मुख्य आसन और जेवनारों में मुख्य स्थान प्रिय लगते हैं । ४७ वे बिधवाओं के घर खा जाते हैं और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं । ये बहुत ही दण्ड पाएंगे ॥

२१ उस ने आंख उठा कर धनवानों को अपना अपना दान भण्डार में डालते देखा २ और उस ने एक कंगाल बिधवा को भी उस में दो दमड़ियां डालते देखा । ३ तब उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि इस कंगाल बिधवा ने सब से बढ़कर डाला है । ४ क्योंकि उन सब ने अपनी अपनी बढ़ती में से दान में कुछ डाला है पर इस ने अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका डाल दी है ।

५ जब कितने लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे कि वह कैसे सुन्दर पत्थरों से और भेंट की वस्तुओं से संवारा गया है तो उस ने कहा । ६ वे दिन आएंगे जिन में यह सब जो तुम देखते हो उन में से पत्थर पर पत्थर भी यहां न छूटेगा जो ढाया न जाएगा । ७ उन्हों ने उस से पूछा हे

गुरु यह कब होगा और ये बातें जब पूरी होने पर होंगी तो उस समय का क्या चिन्ह होगा। ८ उस ने कहा चौकस रहो कि भरमाए न जाओ क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे मैं वही हूं और समय निकट आया है तुम उन के पीछे न जाना। ९ जब तुम लड़ाइयों और बलवों की चरचा सुनो तो घबरा न जाना क्योंकि इन का पहिले होना अवश्य है पर अन्त तुरन्त न होगा॥

१० तब उस ने उन से कहा जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। ११ बड़े बड़े भूईंडोल होंगे और जगह जगह अकाल और मरियां पड़ेंगी और आकाश से भयंकर बातें और बड़े बड़े चिन्ह प्रगट होंगे। १२ पर इन सब बातों से पहिले वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे और सताएंगे और पंचायतों में सौंपेंगे और जेलखानों में डलवाएंगे और राजाओं और हाकिमों के सामने ले जाएंगे। १३ पर यह तुम्हारे लिये गवाही देने का अवसर हो जाएगा। १४ सो अपने अपने मन में ठान रक्खो कि हम पहिले से उत्तर देने की चिन्ता न करेंगे। १५ क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा कि तुम्हारे सब बिरोधी सामना या खण्डन न कर सकेंगे। १६ तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुम्ब और मित्र भी तुम्हें पकड़वाएंगे और तुम में से कितनों को मरवा डालेंगे। १७ और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे। १८ पर तुम्हारे सिर का एक

बाल बांका न होगा । अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रक्खोगे ॥

२० जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो तो जानो कि उस का उजड़ जाना निकट है । २१ तब जो यहूदिया में हों वह पहाड़ों पर भाग जाएं और जो यरूशलेम के भीतर हों वे बाहर निकल जाएं और जो गांवों में हों वे उस में न जाएं । २२ क्योंकि पलटा लेने के ऐसे दिन होंगे जिन में लिखी हुई सब बातें पूरी हो जाएंगी । २३ उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी उन के लिये हाय हाय क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर क्रोध होगा । २४ वे तलवार के कौर हो जाएंगे और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुँचाए जाएंगे और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा । २५ सूरज और चांद और तारा में चिन्ह दिखाई देंगे और पृथिवी पर देश देश के लोगों को संकट होगा और समुद्र और लहरों के गरजने से घबराहट होगी । २६ और डर के मारे और संसार पर आनेवाली बातों की बाट देखने से लोगों के जी में जी न रहेगा क्योंकि आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी । २७ तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे । २८ जब ये बातें

होने लगें तो सीधे होकर अपने सिर उठाना क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा॥

२६ उस ने उन से एक दृष्टान्त भी कहा कि अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो। ३० जब उन की कोंपलें निकलती हैं तो तुम देखकर आप ही जान लेते हो कि धूपकाल निकट है। ३१ इसी रीति से जब तुम ये बातें होते देखो तब जानो कि परमेश्वर का राज्य निकट है। ३२ मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक ये सब बातें न हो लें तब तक यह लोग जाते न रहेंगे। ३३ आकाश और पृथिवी टल जाएंगे पर मेरी बातें कभी न टलेंगी॥

३४ सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालपन और इस जीवन की चिन्ताओं से भारी हो जाएं और वह दिन तुम पर फन्दे की नाईं अचानक आ पड़े। ३५ क्योंकि वह सारी पृथिवि के सब रहनेवालों पर आ पड़ेगा। ३६ इस लिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली बातों से बचने के और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो॥

३७ और वह दिन को मन्दिर में उपदेश करता था और रात को बाहर जाकर जैतून नाम पहाड़ पर रहा करता था। ३८ और बड़े तड़के सब लोग उस की सुनने को मन्दिर में उस के पास आया करते थे॥

२२. अखमीरी रोटी का पर्ब्ब जो फसह कहलाता है निकट था। २ और महायाजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उस को क्यों कर मार डालें पर वे लोगों से डरते थे॥

३ तब शैतान यहूदा में समाया जो इस्करियोती कह-लाता है और जो बारह चेलों में गिना जाता था। ४ उस ने जाकर महायाजकों और पहरुओं के सरदारों के साथ बात चीत की कि उस को क्योंकर उन के हाथ पकड़वाए। ५ वे आनन्दित हुए और उसे रुपये देने का बचन दिया। ६ उस ने मान लिया और अवसर ढूँढने लगा कि जब भीड़ न रहे तो उसे उन के हाथ पकड़वा दे॥

७ तब अखमीरी रोटी के पर्ब्ब का दिन आया जिस में फसह का मेमना मारना चाहिए था। ८ और उस ने पतरस और यूहन्ना को यह कहके भेजा कि जाकर हमारे खाने के लिये फसह तैयार करो। ९ उन्हों ने उस से पूछा तू कहां चाहता है कि हम तैयार करें। १० उस ने उन से कहा देखो नगर में जाते ही एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा। जिस घर में वह जाए तुम उस के पीछे हो लेओ। ११ और उस घर के स्वामी से कहो गुरु तुझ से कहता है कि पाहुनशाला जिस में मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊं कहां है। १२ वह तुम्हें एक सजी सजाई बड़ी अटारी दिखा देगा वहां तैयारी करना। १३ उन्हों ने जाकर

जैसा उस ने कहा था वैसा ही पाया और फसह तैयार किया ॥

१४ जब घड़ी पहुंची तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठा। १५ और उस ने उन से कहा मुझे बड़ी लालसा थी कि दुख भोगने से पहिले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊं। १६ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा। १७ तब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया और कहा इस को लो और आपस में बांट लो। १८ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाख रस अब से कभी न पीऊंगा। १९ फिर उस ने रोटी ली और धन्यवाद करके तोड़ी और उन को यह कहते हुए दी कि यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दी जाती है मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। २० इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी यह कहते हुए दिया कि यह कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है। २१ पर देखो मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेज पर है। २२ क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा ठहराया गया जाता ही है पर हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा वह पकड़वाया जाता है। २३ तब वे आपस में पूछ पाछ करने लगे कि हम में से कौन है जो यह काम करेगा ॥

२४ उन में यह विवाद भी हुआ कि हम में से कौन

बड़ा समझा जाता है। २५ उस ने उन से कहा अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं और जो उन पर अधिकार रखते हैं वे उपकारक कहलाते हैं। २६ पर तुम ऐसे न होना बरन जो तुम में बड़ा है यह छोटे की नाईं और जो प्रधान है वह टहलुए की नाईं बने। २७ बड़ा कौन है भोजन पर बैठनेवाला या टहलुआ क्या भोजन पर बैठनेवाला नहीं पर मैं तुम्हारे बीच में टहलुए की नाईं हूं। २८ तुम ही हो जो मेरी परीक्षाओं में मेरे साथ लगातार रहे। २९ और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये राज्य ठहराया है वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिये ठहराता हूं, ३० कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज़ पर खाओ पीओ और सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो ३१ शमौन हे शमौन देख शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया कि गेहूं की नाईं फटके। ३२ पर मैं ने तेरे लिये बिनती की कि तेरा विश्वास जाता न रहे और जब तू फिरे तो अपने भाइयों को स्थिर करना। ३३ उस ने उस से कहा हे प्रभु मैं तेरे साथ जेलख़ाने जाने और मरने को भी तैयार हूं। ३४ उस ने कहा हे पतरस मैं तुझ से कहता हूं कि आज ही मुर्ग़ा बांग न देगा कि तू तीन बार मुझ से मुकर कर कहेगा कि मैं उसे नहीं जानता॥

३५ और उस ने उन से कहा जब मैं ने तुम्हें बटुए और झोली और जूते बिना भेजा तो क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई। उन्हों ने कहा किसी की नहीं। ३६

उस ने उन से कहा पर अब जिस के पास बटुआ हो वह उसे ले और वैसे ही झोली भी और जिस के पास तलवार न हो वह अपने कपड़े बेचकर एक मोल ले। ३७ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जो लिखा है कि वह अपराधियों के साथ गिना गया उस का मुझ में पूरा होना अवश्य है क्योंकि मेरे विषय की बातें पूरी होने पर हैं। ३८ उन्हों ने कहा हे प्रभु देख यहां दो तलवारें हैं। उस ने उन से कहा बहुत हैं॥

३९ तब वह बाहर निकलकर अपनी रीति के अनुसार जैतून पहाड़ पर गया और चेले उस के पीछे हो लिए। ४० उस जगह पहुँचकर उस ने उन से कहा प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। ४१ और वह आप उन से अलग ढेला फेंकने के टप्पे भर गया और घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगा, ४२ कि हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले तौभी मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूरी हो। ४३ तब स्वर्ग से एक दूत जो उसे सामर्थ देता था उस को दिखाई दिया। ४४ और वह बड़े संकट में होकर और भी लौ लगाकर प्रार्थना करने लगा और उस का पसीना लोहू के थक्के की नाईं भूमि पर गिर रहा था। ४५ तब वह प्रार्थना से उठा और अपने चेलों के पास आकर उन्हें उदासी के मारे सोते पाया। ४६ और उन से कहा क्यों सोते हो उठो प्रार्थना करो कि परीक्षा में न पड़ो॥

४७ वह यह कह ही रहा था कि देखो एक भीड़ आई

और बारहों में से एक जिस का नाम यहूदा था उन के आगे आगे आ रहा था और यीशु का चूमा लेने को उस के पास आया। ४८ यीशु ने उस से कहा क्या तू मनुष्य के पुत्र को चूमा लेकर पकड़वाता है। ४९ उस के साथियों ने जब देखा कि क्या होनेवाला है तो कहा हे प्रभु क्या हम तलवार चलाएं। ५० और उन में से एक ने महायाजक के दास पर चलाकर उस का दहिना कान उड़ा दिया। ५१ इस पर यीशु ने कहा अब बस करो और उस का कान छूकर उसे अच्छा किया। ५२ तब यीशु ने महायाजकों और मन्दिर के पहरुओं के सरदारों और पुरनियों से जो उस पर चढ़ आए थे कहा क्या तुम मुझे डाकू जानकर तलवारें और लाठियां लिए हुए निकले हो। ५३ जब मैं मन्दिर में हर दिन तुम्हारे साथ था तो तुम ने मुझ पर हाथ न डाला पर यह तुम्हारी घड़ी है और अंधेरे का अधिकार॥

५४ वे उसे पकड़ के ले चले और महायाजक के घर में लाए और पतरस दूर दूर पीछे पीछे चलता था। ५५ जब वे आंगन में आग सुलगाकर इकट्ठे बैठे तो पतरस भी उन के बीच में बैठ गया। ५६ और एक लौंड़ी उसे आग के उजाले में बैठे देखकर और उस की ओर ताककर कहने लगी यह भी उस के साथ था। ५७ वह उस से मुकर गया और कहा हे नारी मैं उसे नहीं जानता। ५८ थोड़ी देर पीछे किसी और ने उसे देखकर कहा तू भी उन्हीं में से है पतरस ने

कहा हे मनुष्य मैं नहीं हूं। ५९ घड़ी एक बीते और कोई दृढ़ता से कहने लगा सचमुच यह भी उस के साथ था क्योंकि गलीली है। ६० पतरस ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं जानता तू क्या कहता है। वह कह ही रहा था कि तुरन्त मुर्ग़ ने बांग दी। ६१ तब प्रभु ने फिरकर पतरस की ओर देखा और पतरस को प्रभु की उस बात की सुध आई जो उस ने कही थी कि आज मुर्ग़ के बांग देने से पहिले तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा। ६२ और वह बाहर निकलके फूट फूट कर रोने लगा॥

६३ जो मनुष्य यीशु को पकड़े थे वे उसे ठट्ठों में उड़ा कर पीटने लगे। ६४ और उस की आंखें ढांपकर उस से पूछा कि नबूवत करके बता तुझे किस ने मारा। ६५ और उन्हों ने बहुत सी और भी निन्दा की बातें उस के बिरोध में कहीं॥

६६ जब दिन हुआ तो लोगों के पुरनिए और महा-याजक और शास्त्री इकट्ठे हुए और उसे अपनी महासभा में लाकर पूछा, ६७ यदि तू मसीह है तो हम से कह दे। उस ने उन से कहा यदि मैं तुम से कहूं तो प्रतीति न करोगे, ६८ और यदि पूछूं तो उत्तर न दोगे। ६९ पर अब से मनुष्य का पुत्र सर्व्वशक्तिमान परमेश्वर की दहिनी ओर बैठा रहेगा। सब ने कहा तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है। ७० उस ने उन से कहा तुम आप कहते हो क्योंकि मैं हूं।

७१ तब उन्हों ने कहा अब हमें गवाही का क्या प्रयोजन है क्योंकि हम ने आप ही उस के मुंह से सुना है ॥

२३. तब सारी सभा उठकर उसे पीलातुस के पास ले गई । २ और वे यह कह कर उस पर दोष लगाने लगे कि हम ने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते और अपने आप को मसीह राजा कहते हुए सुना । ३ पीलातुस ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है । उस ने उसे उत्तर दिया कि तू आप ही कह रहा है । ४ तब पीलातुस ने महायाजकों और लोगों से कहा मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं पाता । ५ पर वे और भी दृढ़ता से कहने लगे यह गलील से लेकर यहां तक सारे यहूदिया में उपदेश करके लोगों को उसकाता है । ६ यह सुनकर पीलातुस ने पूछा क्या यह मनुष्य गलीली है । ७ और यह जानकर कि वह हेरोदेस की रियासत का है उसे हेरोदेस के पास भेज दिया कि उन दिनों वह भी यरूशलेम में था ॥

८ हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही खुश हुआ क्योंकि वह बहुत दिनों से उस को देखना चाहता था इस लिये कि उस के विषय में सुना था और उस का कुछ चिन्ह देखने की आशा रखता था । ९ वह उस से बहुतेरी बातें पूछता रहा पर उस ने उस को कुछ उत्तर न दिया । १० और महायाजक और शास्त्री खड़े हुए तन मन से उस पर दोष

लगाते रहे। ११ तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के साथ उस का अपमान कर ठट्ठों में उड़ाया और भड़कीला वस्त्र पहिनाकर उसे पीलातुस के पास लौटा दिया। उसी दिन पीलातुस और हेरोदेस मित्र हो गए। १२ इस से पहिले वे एक दूसरे के बैरी थे॥

१३ पीलातुस ने महायाजकों और सरदारों और लोगों को बुलाकर उन से कहा, १४ तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो और देखो मैं ने तुम्हारे सामने उस की जांच की पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो उन बातों के विषय मैं ने उस में कुछ भी दोष नहीं पाया। १५ न हेरोदेस ने क्योंकि उस ने उसे हमारे पास लौटा दिया है और देखो उस से ऐसा कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु के दण्ड के योग्य ठहरता। १६ सो मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं। १८ सब मिलकर चिल्ला उठे कि इस का काम तमाम कर और हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे। १९ यही किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था और खून के कारण जेलखाने में डाला गया था। २० पर पीलातुस ने यीशु को छोड़ने की इच्छा कर लोगों को फिर समझाया। २१ पर उन्हों ने चिल्लाकर कहा कि उसे क्रूस पर चढ़ा क्रूस पर। २२ उस ने तीसरी बार उन से कहा क्यों उस ने कौन सी बुराई की है। मैं ने उस में मृत्यु के दण्ड के योग्य कोई बात नहीं पाई इस लिये मैं

उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं। २३ पर वे चिल्ला चिल्लाकर पीछे पड़ गए कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए और उन का चिल्लाना प्रबल हुआ। २४ सो पीलातुस ने आज्ञा दी कि उन के मांगने के अनुसार किया जाए। २५ और उस ने उस मनुष्य को जो बलवे और खून के कारण जेलखाने में डाला गया था और जिसे वे मांगते थे छोड़ दिया और यीशु को उन की इच्छा के अनुसार सौंप दिया॥

२६ जब वे उसे लिए जाते थे तो उन्हों ने शमौन नाम एक कुरेनी को जो गांव से आता था पकड़ के उस पर क्रूस लाद दिया कि उसे यीशु के पीछे पीछे ले चले॥

२७ लोगों की बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली और बहुत सी स्त्रियां भी जो उस के लिये छाती पीटती और विलाप करती थीं। २८ यीशु ने उन की ओर फिरकर कहा हे यरूशलेम की पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ पर अपने और अपने बालकों के लिये रोओ। २९ क्योंकि देखो वे दिन आते हैं जिन में कहेंगे धन्य वे जो बांझ हैं और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन जिन्हों ने दूध न पिलाया। ३० उस समय वे पहाड़ों से कहने लगेंगे कि हम पर गिरो और टीलों से कि हमें ढांप लो। ३१ क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साथ ऐसा करते हैं तो सूखे के साथ क्या न किया जाएगा॥

३२ वे और दो मनुष्यों को भी जो कुकर्मी थे उस के साथ घात करने को ले चले॥

३३ जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी कहते हैं पहुँचे तो उन्हों ने वहां उसे और उन कुकर्मियों को भी एक को दहिनी ओर दूसरे को बाईं ओर क्रूसों पर चढ़ाया। ३४ तब यीशु ने कहा हे पिता इन्हें क्षमा कर क्योंकि जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं। और उन्हों ने चिट्ठियां डालकर उस के कपड़े बांट लिये। ३५ लोग खड़े खड़े देख रहे थे और सरदार भी ठट्ठा कर करके कहते थे कि इस ने औरों को बचाया यदि यह परमेश्वर का मसीह और उसका चुना हुआ है तो अपने आप को बचा ले। ३६ सिपाही भी पास आकर और सिरका देकर उसका ठट्ठा कर के कहते थे, ३७ यदि तू यहूदियों का राजा है तो अपने आप को बचा। ३८ और उस के ऊपर एक पत्र भी लगा था कि यह यहूदियों का राजा है॥

३९ जो कुकर्मी लटकाए गये थे उन में से एक ने उस की निन्दा करके कहा क्या तू मसीह नहीं तो अपने आप को और हमें बचा। ४० इस पर दूसरे ने उसे डांट-कर कहा क्या तू परमेश्वर से भी कुछ नहीं डरता। तू भी तो वही दण्ड पा रहा है। ४१ और हम तो न्याय अनुसार दण्ड पा रहे हैं क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं पर इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया। ४२ तब

उस ने कहा हे यीशु जब तू अपने राज्य में आए तो मेरी सुध लेना। ४३ उस ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्ग लोक में होगा॥

४४ और लगभग दो पहर से तीसरे पहर तक सारे देश में अंधेरा छाया रहा। ४५ और सूरज का उजाला जाता रहा और मन्दिर का परदा बीच से फट गया। ४६ और यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ और यह कह कर प्राण छोड़ा। ४७ सूबेदार ने जो कुछ हुआ था देख कर परमेश्वर की बड़ाई की और कहा निश्चय यह मनुष्य धर्मी था। ४८ और भीड़ जो यह देखने को इकट्ठी हुई थी सब जो हुआ था देखकर छाती पीटती हुई लौट गई। ४९ और उस के सब जान पहचान और जो स्त्रियां गलील से उस के साथ आई थीं दूर खड़ी हुई यह सब देख रही थीं॥

५० और देखो यूसुफ नाम एक मन्त्री जो उत्तम और धर्मी पुरुष, ५१ और उन के बिचार और उन के इस काम से प्रसन्न न था और वह यहूदियों के नगर अरिमतीया का रहनेवाला और परमेश्वर के राज्य की बाट जोहनेवाला था। ५२ उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांग ली। ५३ और उसे उतारकर चादर में लपेटा और एक कबर में रक्खा जो चटान में खोदी हुई थी और उस में कोई कभी न रक्खा गया था। ५४ वह तैयारी का दिन था

और विश्राम का दिन होने पर था। ५५ और उन स्त्रियों ने जो उस के साथ गलील से आई थीं पीछे पीछे जाकर उस कबर को देखा और यह भी कि उस की लोथ किस रीति से रक्खी गई। ५६ और लौटकर सुगन्धित बस्तुएं और अतर तैयार किया और बिश्राम के दिन तो उन्हों ने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया॥

२४. पर अठवारे के पहिले दिन बड़ी भोर वे उन सुगन्धित बस्तुओं को जो उन्हों ने तैयार की थीं ले के कबर पर आईं। २ और उन्हों ने पत्थर को कबर पर से लुढ़का हुआ पाया। ३ और भीतर जाकर प्रभु यीशु की लोथ न पाई। ४ जब वे इस बात से हक्का बक्का हो रही थीं तो देखो दो पुरुष झलकते बस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए। ५ जब वे डर गईं और धरती की ओर मुंह झुकाए रहीं तो उन्हों ने उन से कहा तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ती हो। ६ वह यहां नहीं पर जी उठा है स्मरण करो कि उस ने गलील में रहते हुए तुम से कहा था। ७ अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए और क्रूस पर चढ़ाया जाए और तीसरे दिन जी उठे। ८ तब उस की बातें उन को स्मरण आईं। ९ और कबर से लौटकर उन्हों ने उन ग्यारहों को और और सब को ये सब बातें बता दीं। १० जिन्हों ने प्रेरितों से ये बातें कहीं वे मरयम मगदलीनी और योअन्ना और

याकूब की माता मरयम और उन के साथ की और स्त्रियां थीं। ११ पर उन की बातें उन्हें कहानी सी समझ पड़ीं और उन्हों ने उन की प्रतीति न की। १२ तब पतरस उठकर कबर पर दौड़ गया और झुककर केवल कपड़े पड़े देखे और जो हुआ था उस से अचम्भा करता हुआ अपने घर चला गया॥

१३ देखो उसी दिन उन में से दो जन इम्माऊस नाम एक गांव को जा रहे थे जो यरूशलेम से कोस चार एक पर था। १४ और वे इन सब बातों पर जो हुई थीं आपस में बातचीत करते जाते थे। १५ और जब वे बातचीत और पूछपाछ कर रहे थे तो यीशु आप पास आकर उन के साथ हो लिया। १६ पर उन की आंखें ऐसी बन्द कर दी गई थीं कि उसे पहचान न सके। १७ उस ने उन से पूछा ये क्या बातें हैं जो तुम चलते चलते आपस में करते हो। वे उदास से खड़े रह गये। १८ यह सुनकर उन में से क्लियुपास नाम एक जन ने कहा क्या तू यरूशलेम में अकेला परदेशी है जो नहीं जानता कि इन दिनों में उस में क्या क्या हुआ है। १९ उस ने उन से पूछा कौन सी बातें। उन्हों ने उस से कहा यीशु नासरी के विषय जो परमेश्वर और सब लोगों के निकट काम और वचन में सामर्थी नबी था। २० और महायाजकों और हमारे सरदारों ने उसे पकड़वा दिया कि उस पर मृत्यु की आज्ञा दी जाए और उसे क्रूस पर चढ़-

बाया। २१ पर हमें आशा थी कि यही इस्राएल् को छुटकारा देगा और इन सब बातों को छोड़ इस बात को हुए तीसरा दिन है। २२ और हम में से कई स्त्रियों ने भी हमें चकित कर दिया है जो भोर को कबर पर गईं। २३ और जब उस की लोथ न पाई तो यह कहती हुई आईं कि हम ने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया जिन्हों ने कहा कि वह जीता है। २४ तब हमारे साथियों में से कई एक कबर पर गए और जैसा स्त्रियों ने कहा था वैसा ही पाया पर उस को न देखा। २५ तब उस ने उन से कहा हे निर्बुद्धियों और नबियों की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियो। २६ क्या अवश्य न था कि मसीह ये दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे। २७ तब उस ने मूसा से और सब नबियों से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में अपने विषय की बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया। २८ इतने में वे उस गांव के पास पहुँचे जहां वे जा रहे थे और उस के ढंग से ऐसा जान पड़ा कि आगे बढ़ा चाहता है। २९ पर उन्हों ने यह कहकर उसे रोका कि हमारे साथ रह क्योंकि सांझ हो चली और दिन अब बहुत ढल गया है। तब वह उन के साथ रहने को भीतर गया। ३० जब वह उन के साथ भोजन करने बैठा तो उस ने रोटी लेकर धन्यवाद किया और उसे तोड़कर उन को देने लगा। ३१ तब उन की आंखें खुल गईं और उन्हों ने उसे पहचान लिया

और वह उन की आंखों से छिप गया। ३२ उन्हों ने आपस में कहा जब वह मार्ग में हम से बातें करता था और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था तो क्या हमारे मन में उमङ्ग न आई। ३३ वे उसी घड़ी उठकर यरूशलेम को लौट गए और उन ग्यारहों और उन के साथियों को इकट्ठे पाया। ३४ वे कहते थे प्रभु सचमुच जी उठा है और शमौन को दिखाई दिया है। ३५ तब उन्हों ने मार्ग की बातें उन्हें बता दीं और यह भी कि उन्हों ने उसे रोटी तोड़ते समय क्योंकर पहचाना॥

३६ वे ये बातें कह ही रहे थे कि वह आप ही उन के बीच में आ खड़ा हुआ और उन से कहा तुम्हें शान्ति मिले। ३७ पर वे घबरा गये और डर गये और समझे कि हम किसी भूत को देखते हैं। ३८ उस ने उन से कहा क्यों घबराते हो और तुम्हारे मन में क्यों सन्देह होते हैं। ३९ मेरे हाथ और मेरे पांव देखो कि मैं ही हूं मुझे छूकर देखो क्योंकि आत्मा के हाड़ मांस नहीं होता जैसा मुझ में देखते हो। ४० यह कहकर उस ने उन्हें अपने हाथ पांव दिखाये। ४१ जब आनन्द के मारे उन को प्रतीति न हुई और अचरज करते थे तो उस ने उन से पूछा क्या यहां तुम्हारे पास कुछ भोजन है। ४२ उन्हों ने उसे भूनी मछली का टुकड़ा दिया। ४३ उस ने लेकर उन के सामने खाया। ४४ फिर उस ने उन से कहा ये मेरी वे बातें हैं जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते

हुए तुम से कही थीं कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और नबियों और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं सब पूरी हों। ४५ तब उस ने पवित्र शास्त्र बूझने के लिये उन की समझ खोली। ४६ और उन से कहा यों लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। ४७ और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उस के नाम से किया जायगा। ४८ तुम इन सब बातों के गवाह हो। ४९ और देखो जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है मैं उस को तुम पर उतारूंगा और तुम जब तक ऊपर से सामर्थ न पाओ तब तक इसी नगर में ठहरे रहो॥

५० तब वह उन्हें बैतनियाह के पास तक बाहर ले गया और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी। ५१ उन्हें आशीष देते हुए वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। ५२ और वे उस को प्रणाम करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गये। ५३ और लगातार मन्दिर में परमेश्वर का धन्यवाद किया करते थे।

The Mission Press, Allahabad.